Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 29

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

11 ज़विल हज्ज 1442 हिज्री कमरी 22 वफा 1400 हिज्री शम्सी 22 जुलाई 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

अध्यात्मिक और शारीरिक पवित्रता का महत्व

(1378) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दो क़ब्रों के पास से गुज़रे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : उनको अज़ाब दिया जा रहा है और किसी बड़े गुनाह की वजह से अज़ाब नहीं दिया जा रहा। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जबकि उनमें से एक चुग़ली करता फिरता था और दूसरा जो है वह मूत्र से बचाओ नहीं करता था। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : फिर आपने एक हरी टहनी ली और उसके दो टुकड़े किए। फिर उनमें से हर एक टुकड़े को हर एक क़ब्र पर गाड़ दिया। फिर फ़रमाया : उम्मीद है कि जब तक यह सूखें नहीं उनके अज़ाब में तख़फ़ीफ़ की जाए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हैं :

"हम फ़रिश्तों पर, ख़ुदा की किताबों पर, हदीसें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर, बहिश्त, दोज़ख़, कब्र के आज़ाब, तक़दीर, हश्र अजसाद सब पर सिदक़-ए-दिल से ईमान लाते हैं। हम ऐसे विषयों की व्याख्या ख़ुदा के हवाले करते हैं क्योंकि सचेत धर्म यही है कि इन्सान संक्षेप पर ईमान लाए और व्याख्या को ख़ुदा के हवाले कर दे।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 5 पृष्ठ 134 प्रकाशन क़ादियान, ऐडीशन 2003)

(1381) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगों में जिस मुस्लमान के तीन ऐसे बच्चे मर जाएं जो अभी (सही और ग़लत में) अंतर करने वाली आयु को न पहुंचे हो तो अल्लाह उसे ज़रूर ही अपनी उस रहमत के अधीन जन्नत में दाख़िल करेगा जो उनके साथ है।

(सही बुख़ारी, जल्द 2 किताबुल जनायज़, प्रकाशन 2006 क़ादियान)

काग़ज़ों का क्या प्रभाउस का प्रभाव चिरस्थायी होता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भव और क़ुरआन करीम के अवतरण का उद्देश्य

पहले भी वर्णन किया है और अब भी इस का वर्णन करना लाभ से ख़ाली नहीं है, इसलिए मैं फिर कहना चाहता हूँ कि अल्लाह तआला जो अंबिया अलैहिमुस्सालम को भेजता है और आख़िर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसने दुनिया की हिदायत के लिए भेजा और क़ुरआन मजीद को नाज़िल फ़रमाया तो इस का उद्देश्य क्या था? हर व्यक्ति जो काम करता है उस का कोई न कोई लक्ष्य होती है। ऐसा ख़्याल करना कि क़ुरआन शरीफ़ के नाज़िल करने या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भेजने से अल्लाह तआला का कोई उद्देश्य और मक़सद नहीं है, चरम स्तर की गुस्ताख़ी और बे-अदबी है। क्योंकि इस में (अल्लाह का पनाह)अल्लाह तआला की तरफ़ एक व्यर्थ कार्य को सम्बन्धित किया जाएगा; और हालाँकि उसकी ज़ात पवित्र है(सुब्हान तआला शानुहो)

अत: याद रखो कि किताब मजीद के भेजने और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रादुर्भव से अल्लाह तआला ने यह चाहा है कि ताकि संसार पर महान रहमत का नमूना दिखावे। जैसे फ़रमाया مَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ (अल-अन्बिया:108) और इसीतरह कुर्आन मजीद के भेजने का उद्देश्य बताया कि هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ (अल-बकर: 3) यह ऐसी महान उद्देश्य हैं कि इनकी तुलना नहीं पाई जा सकती। इसी लिए अल्लाह तआला चाहता है कि जैसे समस्त विभिन्न कमाल जो अंबिया अलैहिमुस्सालम में थे, वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वजूद में जमा कर दिए। और समस्त विशेषताएं और कमाल जो विभिन्न किताबों में थे, वे क़ुरआन शरीफ़ में जमा कर दिए। और ऐसा ही जितने कमाल समस्त उम्मतों में थे वे इस उम्मत में जमा कर दिए। अत: ख़ुदा तआला चाहता है कि हम इन कमालों को पा लें और यह बात भी भूलनी नहीं चाहिए कि जैसे वह महान कमाल हमको देना चाहता है, उसी की अनुसार उसने हमें शक्तियां भी प्रदान की हैं। क्योंकि यदि उसके अनुसार शक्तियां न दी जाती तो फिर हम इन कमालों को किसी सूरत और हालत में पा ही नहीं सकते थे। इस का उदाहरण ऐसा है कि जैसे कोई व्यक्ति एक गिरोह की दावत करे, तो ज़रूर है कि वह इस गिरोह के अनुसार खाना तैयार करे और इसी के

शेष पृष्ठ 10 पर

बहाई लोग हर मुल्क में जाकर अलग क़ानून बनाते हैं, यही हाल ईसाइयत का है

इसके इसके विपरीत इस्लाम की सब तालीम एक जड़ पर क़ायम है, न कम करने की ज़रूरत हुई न ज़्यादा करने की। इस्लाम ने शुरू से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ । कहा और बाद में कोई तबदीली इस में नहीं हुई

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत आयत नम्बर 27 مَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ِۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ की व्याख्या में फ़रमाते हैं

شَجَرَة طَيِّبَة के मुक़ाबला में जो बातें झूठे मज़हब के विषय में प्रस्तुत की गई हैं ये हैं

(1) उस की शक्ल मकरूह हो (2) अच्छी और बुरी तालीमों को मिला कर प्रस्तुत करता हो (3) उत्तम परिणाम न निकलें। अर्थात उस पर चल कर कोई आदमी ऐसे पैदा न हो जो ख़ुदा तआला तक पहुंच सकें। जैसे बहाई मज़हब है कि उसे ज़ाहिर हुए क़रीबन नव्वे वर्ष हो गए हैं। (अर्थात बाब के दावा से लेकर इस वक़्त तक लेकिन एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं कि जिसने कहा हो कि इस तालीम पर चल कर मुझ से ख़ुदा तआला कलाम करता है लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आए हुए अभी थोड़ा ही समय हुआ है कि उनके अनुयाइयों में से सैंकड़ों गिनाए जा सकते हैं जो ख़ुदा तआला सेवर्तालाप करते होते हैं।

''مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ''

(1) वे किसी मुल्क में काम न रह सके। अर्थात उस को ऐसा अवसर ही नहीं दिया जाता कि उसका तजुर्बा करके दुनिया कोई नतीजा निकाले। बिना तजुर्बा ही वह मर जाती है। (2) उसके उसूल को बदलने की ज़रूरत प्रस्तुत आती रहती है। इस्लाम ने शुरू से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहा और बाद में कोई तबदीली

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-21)

जलसा सालाना जर्मनी का तीसरा दिन,आलमी बैअत, समापनीय भाषण

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,नौ-मौबाइनात की हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

समापनीय भाषण

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (शेष.....)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

विभिन्न अवसरों पर भी और यहां कल जर्मन और ग़ैर मुस्लिम मेहमानों के साथ जो सैशन था इस में मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और क़ुरआन-ए-करीम से जिहाद और अमन के बारे में इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की थी। इस पर कुछ मेहमानों ने अपने विचार भी दिए कि ये बातें सुनकर हमारे इस्लाम के बारे में विचारों बिल्कुल बदल गए हैं। अधिकतर मेहमानों ने इसके अतिरिक्त भी विभिन्न अवसरों पर ये विचारों दिए हैं कि हम जमाअत को जानते हैं और इस कारण से जिन अहमदियों से हमारा वास्ता है उन्होंने हमें इस्लाम की सुन्दर शिक्षा बताई है। अत: यह शिक्षा बताना हम में से प्रत्येक का काम है और यह शिक्षा वही है जो क़ुरआन-ए-करीम ने हमें दी है और फिर तब्लीग़ के लिए हिक्मत के शब्द में यह भी अल्लाह तआला ने हमें बताया कि ऐसे तरीक़ से बात की जाए जो दूसरा समझ सके। एक कम पढ़े लिखे इन्सान के सामने यदि अपनी इल्मियत बघारी जाए तो उसे कोई लाभ नहीं देगी। तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी यही फ़रमाया है कि लोगों से उनकी समझ और सोच के अनुसार बात किया करो। अत: यह बहुत महत्वपूर्ण बात है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अल्लाह तआला फ़रमाता है तुम्हारे कामों में से बेहतरीन काम और तुम्हारी बातों में से बेहतरीन बात यह है कि तुम अल्लाह तआला के संदेश को सच्चाई, हिक्मत और चमत्कारों के माध्यम से संसार तक पहुँचाओ क्योंकि ख़ुदा तआला को यही बात सबसे ज़्यादा पसंद है और अल्लाह तआला के इस आदेश पर अनुकरण करने के कारण से तुम भी ख़ुदा तआला के पसंदीदा बन जाओगे। अल्लाह तआला को जो सबसे ज़्यादा चीज़ पसंद है वह यही है कि इन्सान शैतान के पंजे से निकल कर सही आबिद और ख़ुदा-परस्त बन जाए और इस का लाभ ख़ुदा तआला को नहीं बल्कि इन्सान को ही है। अल्लाह तआला कहता है मुझे क्या फ़र्क पड़ता है यदि तुम इबादत करते हो मेरी या नहीं करते। जबकि शैतान को भी ख़ुदा तआला ने खुली छूट दी हुई है कि बंदों को वरग़लाने और ख़ुदा तआला से दूर करने में बेशक जो प्रयास करने है करते रहो। परन्तु नबियों के माध्यम से हमारी रहनुमाई के भी सामान कर दिए। और फिर अंबिया के मानने वालों को भी आदेश दिया कि अंबिया के काम को तुम आगे बढ़ाओ और दावत इल्लाह के काम को भी कभी ख़त्म न होने दो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अत: इस ज़माने में जहां शैतान या शैतानी ताक़तें अपनी समस्त कुव्वतों के साथ संसार को शैतान की झोली में गिराना चाहती हैं वहां दूसरी ओर ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की यह ज़िम्मेदारी डाली है कि संसार कि हिदायत की ओर रहनुमाई करो और जैसा कि मैंने जुमा के ख़ुत्बे में भी कहा था कि इस बिगड़े हुए समय में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नई ज़मीन और नया आसमान बनाने के लिए भेजा था और अब हम में से प्रत्येक ने इस नई ज़मीन और नए आसमान को बनाने में अपना किरदार अदा करना है। और जहां अपने दिलों की ज़मीन समतल करके अल्लाह तआला की याद को आबाद करना है वहां दुनिया को तो नई ज़मीन और नए आसमान बनाने के तरीक़े भी सिखाने हैं। तो बहर हाल संसार में ये दो गिरोह हैं एक शैतान के बहकावे में आने वाला और दूसरे ख़ुदा तआला की ओर बुलाने वाले। आज समस्त ज़मीन पर जमाअत अहमदिया ही वह हक़ीक़ी जमाअत है जो संसार को ख़ुदा तआला की ओर बुलाने का वास्तविक किरदार अदा कर रही है या कर सकती है और हमें इस जमाअत में शामिल करके अल्लाह तआला ने हम पर बड़ा एहसान किया है। और इस एहसान का शुक्र अदा करने के लिए हम में से प्रत्येक को अपनी ज़िम्मेदारियों की अदायगी की ओर ध्यान देना चाहिए और प्रयास करन चाहिए। और यह प्रयास करते हुए दावत इलल्लाह के फ़रीज़े को अदा करने की ओर पहले से बढ़कर आगे आना चाहिए। अल्लाह तआला के कलाम के बारीक दर बारीक नुकात को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने समस्त तर्कों को साथ खोल कर वर्णन फ़रमाया और एक ऐसा ख़ज़ाना हमें अता फ़रमाया है जो न ख़त्म होने वाला है। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस पर अनुकरण करते हुए कि जो चीज़ तुम अपने लिए पसंद करते हो अपने भाई के लिए भी करो हमारा कर्तव्य है कि यह ख़ज़ाना जो क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा के इलम-ओ-मार्फ़त से भरा हुआ है मुस्लमानों तक भी पहुंचाएं और ग़ैर मुस्लमानों तक भी पहुंचाएं और शैतान के चंगुल से निकाल कर उन्हें ख़ुदा तआला का हक़ीक़ी बंदे बनाएँ। उन्हें तथाकथित उलमा के पंजे से छुड़ाएं जो उन्हें अब इस ज़माने के इमाम से दूर कर रहे हैं और इसके लिए ये लोग अपनी समस्त ताक़तों को प्रयोग कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पिछले वर्षों की निसबत यहां भी और संसार के प्रत्येक मुल्क मेंभी ये रो चली है कि परिचय बढ़े हैं और लोग अहमदियत के क़रीब हो रहे हैं। बड़े पैमाने पर अहमदियत को जाना जाता है और मुल्कों के बड़े-बड़े शहरों में अहमदियत को अब लोग जानने लग गए हैं। और इस में मुस्लमान और ग़ैर मुस्लिम सब शामिल हैं परन्तु इसके लिए हमें भी अपनी हालतों को उदाहरण बनाने के साथ उनके दिलों को फेरने के लिए दुआ का हक़ अदा करने का प्रयास करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल का यह पूर्ण भाषण आगे किसी अंक में प्रकाशित होगा। इंशा-ए-अल्लाह।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण छ: बजकर दस मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना जर्मनी की हाज़िरी का ऐलान करते हुए फ़रमाया कि इस वर्ष जलसा की मजमूई हाज़िरी 36037 है। जिस में महिलाओं की हाज़िरी 16845 और पुरुषों की हाज़िरी 17560 और इस के अतिरिक्त 1632 की संख्या में तब्लीग़ी मेहमान शामिल हुए।

इस जलसे में 55 देशों की नुमाइंदगी हुई और 3024 मेहमानान किराम, विभिन्न देशों से जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुए

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार अफ्रीकन अहमदी लोगों ने अपनी विशेष रिवायती ढंग में अपना प्रोग्राम प्रस्तुत किया और कलिमा तुय्यबा का विर्द किया।

फिर अरब अहमदी लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम का अरबी क़सीदा बड़े सुन्दर ढंग में प्रस्तुत किया।

फिर इसके बाद देश मेसीडोनिया से आए हुए नौ-मौबाईन ने अपनी मेसीडोनेन् भाषा में एक नज़्म सूरीली आवाज़ के साथ प्रस्तुत की। नज़्म पढ़ने वालों में नौजवानों के साथ बच्चे भी शामिल थे। जो मेसीडोनेन् भाषा में नज़्म प्रस्तुत की गई उसका अनुवाद निमंलिखित है।

इस बात का ऐलान करो कि अल्लाह तआला वाहिद है और उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है। और यह कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके महबूब हैं । हमारा दीन इस्लाम है, हमारी निजात

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वह महान इन्सान था जिसके अदल और इन्साफ़ की मिसाल दुनिया के पर्दे पर बहुत कम पाई जाती है

(मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

जब मैं अपने रब से मिलूँगा और वह मुझसे पूछेगा तो मैं उत्तर दूँगा कि मैं ने तेरे बंदों में से बेहतरीन को तेरे बंदों पर ख़लीफ़ा बनाया है

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो)

"हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ुस्से के विषय में आया है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो से किसी ने पूछा कि इस्लाम से पूर्व आप रज़ियल्लाहु अन्हो बड़े ग़ुस्से वाले थे,

" हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि ग़ुस्सा तो वही है जबकि पहले बे-ठिकाने चलता था परन्तु अब ठिकाने से चलता है।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मिंबर पर चढ़े तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो का सबसे पहला कलाम यह था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ شَدِیْدٌ فَلَیِّنِیْ وَ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ وَ اِنِّیْ بَخِیْلٌ فَسَخِّنِیْ

कि हे अल्लाह! मैं सख़्त हूँ अतः तू मुझे नरम कर दे और मैं कमज़ोर हूँ अतः तू मुझे ताक़तवर बना दे और मैं कंजूस हूँ अतः तू मुझे उदार कर दे

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारूक़-ए- आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो के औसाफ़ की विशेषताओं का वर्णन

सात मरहूमीन आदरणीया सुहेला महबूब साहिबा पत्नी फ़ैज़ अहमद साहिब गुजराती दरवेश मरहूम नाज़िर बैतुलमाल, आदरणीय राजा ख़ुरशीद अहमद मुनीर साहिब मुरब्बी सिलसिला, आदरणीय ज़मीर अहमद नदीम साहिब मुरब्बी सिलसिला, आदरणीय ईसा मवाकी तलमिया साहिब नैशनल नायब अमीर तनज़ानिया, आदरणीय शेख़ मुबश्शिर अहमद साहिब सुपरवाइज़र निज़ामत तामीरात क़ादियान,आदरणीय सैफुल्लाह साहिब सिडनी आस्ट्रेलिया और आदरणीय मसऊद अहमद हयात साहिब का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 जून 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आजकल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन चल रहा है। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और फ़रमाया मुझे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में बताओ। तो उन्होंने अर्थात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा, अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आप की राय से भी अफ़ज़ल हैं सिवाए इसके कि उनकी तबीयत में सख़्ती है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया सख़्ती इसलिए है कि वह मुझमें नरमी देखते हैं। यदि इमारत उनके सपुर्द हो गई तो वह अपनी बहुत सी बातें जो उनमें हैं उनको छोड़ देंगे क्योंकि मैंने उनको देखा है कि जब मैं किसी व्यक्ति पर सख़्ती करता हूँ तो वह मुझे उस व्यक्ति से राज़ी करने की कोशिश करते हैं और जब मैं किसी व्यक्ति से नरमी करता हूँ, नरमी का व्यवहार करता हूँ तो वह उस वक़्त मुझे सख़्ती करने को कहते हैं। इसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और उनसे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि उनका बातिन उनके ज़ाहिर से भी बेहतर है और हम में उन जैसा कोई नहीं। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने दोनों अस्हाब से फ़रमाया। जो कुछ मैं ने तुम दोनों से कहा है इस का वर्णन किसी और से न करना और यदि मैं उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को छोड़ता हूँ तो उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से आगे नहीं जाता (अर्थात आप रज़ियल्लाहु अन्हो के नज़दीक दोनों ऐसे लोग थे जो ख़िलाफ़त का हक़ अदा करने वाले थे) और उनको यह इख़तियार होगा कि वे तुम्हारे उमूर के विषय में कोई कमी न करें। अब मेरी यह ख़ाहिश है कि मैं तुम्हारे उमूर से अलैहदा हो जाऊं और तुम्हारे पूर्वजों में से हो जाऊं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की बीमारी के दिनों में हज़रत तल्हा बिन उबयदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लोगों पर ख़लीफ़ा बना दिया है हालाँकि आप देखते हैं कि वह आपकी उपस्थितगी में लोगों से किस तरह व्यवहार करते हैं और उस वक़्त क्या हाल होगा जब वह अकेले होंगे? और आप रज़ियल्लाहु अन्हो अपने रब से मुलाक़ात करेंगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो से छूट के बारे में पूछेगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मुझे बिठाओ। तो उन्होंने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को सहारा देकर बिठाया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा। क्या तुम मुझे अल्लाह से डराते हो? जब मैं अपने रब से मिलूँगा और वह मुझसे पूछेगा तो मैं उत्तर दूँगा कि मैं ने तेरे बंदों में से बेहतरीन को तेरे बंदों पर ख़लीफ़ा बनाया है। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को अलैहदगी में बुलायाता कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में वसीयत लिख दें। फिर फ़रमाया लिखों بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ यह अबू बकर बिन अब्बू क़हाफ़ा की वसीयत मुस्लमानों के नाम है। इतना कह कर आप पर बेहोश होने जैसी की अवस्था हो गई और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी तरफ़ से लिखा कि मैं ने तुम पर उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़लीफ़ा निर्धारित किया है और मैं ने तुम्हारे विषय में ख़ैर में कमी नहीं की। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को सुधार हुआ तो फ़रमाया मुझे पढ़ कर सुनाओ क्या लिखा हुआ है। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने सुनाया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाहु-अकबर कहा और फ़रमाया मेरा ख़्याल है कि तुम डर गए कि यदि मैं इस बेहोशी में वफ़ात पा जाऊं तो कहीं लोगों में मतभेद न पैदा हो जाए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हाँ यही बात है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह तुम्हें इस्लाम और मुस्लमानों की तरफ़ से बदला प्रदान करे।

(अल् कामिल फ़ित्तारीख इब्ने असीर भाग 2 पृष्ठ 272-273 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई.)

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़लीफ़ा होने की जो पंक्तियाँ अपनी ओर से लिखी थीं उस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कोई एतराज़ नहीं किया। तारीख़ तिबरी में लिखा है कि मुहम्मद बिन इब्राहीम बिन हारिस वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को अलैहदगी में बुलाया और फ़रमाया लिखों بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ यह अनुबंध अबू बकर बिन अब्बू क़हाफ़ा की तरफ़ से मुस्लमानों के लिए है और इसके बाद रावी कहते हैं फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पर बेहोश होने जैसी की अवस्था हो गई और आप रज़ियल्लाहु अन्हो बे होश हो गए। इसके बाद इस तरह जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो होश में आए। जब सुधार हुआ तो वही बातें हुए और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से पढ़ कर सुनाने के लिए कहा। इस को सुनकर फिर जैसा कि वर्णन हुआ है हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु

अन्हो ने अल्लाहु-अकबर कहा। फिर हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया: अल्लाह तुम्हें इस्लाम और इस्लाम वालों की तरफ़ से उत्तम प्रतिफल दे जो तुमने ये पंक्तियाँ लिख दी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस तहरीर को इस जगह बरक़रार रखा, कोई तबदीली नहीं की।

(तारीख़ अल् तिबरी, जल्द 2 पृष्ठ 353 सन् 13 हिज्री, ज़िकर इस्तख़लाफ़ उमर बिन ख़त्ताब, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलवाया और उनसे फ़रमाया कि मुझे ख़लीफ़ा के लिए किसी व्यक्ति का मश्वरा दो। अल्लाह की क़सम तुम मेरे नज़दीक मश्वरे के योग्य हो। इस पर उन्होंने कहा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया लिखो। तो उन्होंने लिखा यहां तक कि नाम तक पहुंचे तो हज़रत अबू बकर बेहोश हो गए। फिर जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ठीक हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया लिखो उमर रज़ियल्लाहु अन्हो।

फिर एक रिवायत में है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वसीयत हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो तहरीर कर रहे थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पर बेहोश होने जैसी अवस्था हो गई। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम लिख दिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ठीक हुए तो उन्होंने दरयाफ़त फ़रमाया तुमने क्या लिखा है? उन्होंने कहा मैं ने लिखा है उमर रज़ियल्लाहु अन्हो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया तुमने वही लिखा जिसका मैं ने इरादा किया था कि तुमसे कहूँगा। यदि तुम अपना नाम भी लिख देते तो तुम भी इस के योग्य थे। (सीरत उमर बिन ख़त्ताब अज़ इब्ने जोज़ी, पृष्ठ 44-45 فی ذکر عهد ابی بکرعلی عمر... المطبعة المصریه الازهر)

एक रिवायत में वर्णित है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बीमार हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और मुहाजिरीन-ओ-अंसार के कुछ लोगों की तरफ़ संदेश भेजा और फ़रमाया अब वक़्त आ गया है जो तुम देख रहे हो और तुम्हें हुक्म देने के लिए कोई नहीं खड़ा। यदि तुम चाहो तो अपने में से किसी को चुन लो और यदि तुम लोग चाहो तो मैं तुम्हारे लिए चुन लूं। उन्होंने अर्ज़ किया बल्कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे लिए चुन लें। उन्होंने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया लिखो व्याह वो अह्द है जो अबूबकर बिन अब्बू क़हाफ़ा ने इस दुनिया से जाते हुए अपना आख़िरी अह्द किया और आख़िरत में दाख़िल होते हुए अपना पहला अह्द किया जहां दुश्चरित्र तौबा करेगा और काफ़िर ईमान लाएगा और झूठा तसदीक़ करेगा और वह अह्द यह है कि वे गवाही देते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके बंदे और उसके रसूल हैं और मैं ख़लीफ़ा निर्धारित करता हूँ। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पर बेहोश होने जैसी की अवस्था हो गई तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुद ही उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो लिख दिया। फिर जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का सुधार हुआ तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया क्या तुमने कुछ लिखा? तो उन्होंने कहा जी हाँ मैं ने लिखा है उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए। यदि तुम अपना नाम भी लिख देते तो तुम उसके योग्य थे। अत: तुम लिखो मैं ने अपने बाद उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को तुम्हारा ख़लीफ़ा निर्धारित किया है और मैं तुम लोगों के लिए उन पर राज़ी हूँ।

(सही तारीख़ अल् तिबरी, जल्द 3 पृष्ठ 126 हाशिया, वर्णन इस्तख़लाफ़ उमर बिन ख़त्ताब, दार इब्ने कसीर दमिशक़ 2007 ई.)

जब वसीयत लिखी जा चुकी तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया। उसे लोगों को पढ़ कर सुनाया जाए। फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों को जमा किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने आज़ाद किए ग़ुलाम के हाथ ख़त भेजा। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो भी उसके साथ थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों को कहते ख़ामोश हो जाओ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़लीफ़ा की बात सुनो क्योंकि उन्होंने तुम्हारे लिए ख़ैर ख़्वाही में कमी नहीं की। तब लोग सुकून से बैठ गए और उनके सामने वसीयत पढ़ी गई। उन्होंने उसे सुना और इताअत की। उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों की तरफ़ मायल हुए और फ़रमाया क्या तुम इस पर राज़ी हो जिसे मैं ने तुम पर ख़लीफ़ा निर्धारित किया है क्योंकि मैं ने किसी रिश्तेदार को तुम पर ख़लीफ़ा निर्धारित नहीं किया। मैं ने नि:संदेह तुम पर उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़लीफ़ा निर्धारित किया है। अत: उस को सुनो और इताअत करो और अल्लाह की क़सम! नि:संदेह मैं ने इस बारे में ग़ौर-ओ-फ़िक्र में कमी नहीं की। इस पर लोगों ने कहा हम ने सुना और इताअत की। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलाया और उनसे फ़रमाया कि मैं ने तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा पर ख़लीफ़ा निर्धारित किया है और आप अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को अल्लाह का तक़्वा इख़तियार करने की वसीयत की। फिर फ़रमाया हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो नि:संदेह अल्लाह के कुछ हुक़ूक़ हैं जो रात के वक़्त होते हैं जिन्हें वह दिन के वक़्त में क़बूल नहीं करता और कुछ हुक़ूक़ दिन के हैं जिन्हें वह रात में क़बूल नहीं करता और नि:संदेह वह उस वक़्त तक नवाफ़िल क़बूल नहीं करता जब तक फ़रायज़ पूरे न किए जाएं। हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो! क्या तुम नहीं देखते कि इन्ही लोगों के तराज़ू भारी हैं जिनके हक़ की पैरवी करने और भारी होने पर क़ियामत के दिन तराज़ू भारी होंगे। जो सच्चाई की पैरवी करेंगे उनके तराज़ू क़ियामत के दिन भारी होंगे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया और तराज़ू के लिए यह बात हक़ है कि कल को इस में वही बात रखी जाएगी जो भारी होगी। हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो क्या तुम नहीं देखते कि इन्ही लोगों के तराज़ू हल्के हैं जिनके क़ियामत के दिन तराज़ू हल्के होंगे। उनके बातिल की पैरवी और उनके हल्का होने की वजह से अर्थात वे सच्चाई की पैरवी नहीं कर रहे थे और नेकियां नहीं बजा ला रहे थे इसलिए क़ियामत के दिन फिर उनके तराज़ू हल्के होंगे। और तराज़ू के लिए यह बात हक़ है कि जब भी इस में बातिल रखा जाएगा तो वह हल्का ही होगा। हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो! क्या तुम नहीं देखते कि नरमी वाली आयात सख्ती वाली आयात के साथ नाज़िल हुई हैं और सख्ती वाली आयात नरमी वाली आयात के साथ ताकि मौमिन ध्यान रखने वाले और डरने वाले भी हों। एक तरफ़ नेकी का ख्याल रखें और दूसरे अल्लाह तआला का ख़ौफ़ भी उनमें हो और कोई ऐसी ख़ाहिश न रखें जिसका अल्लाह से ताल्लुक़ न हो और न ही वे किसी ऐसी बात से डरे जो उसके अपने हाथों से हो। हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हो! क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आग वालों का महिज़ उनके बुरे कर्म की वजह से वर्णन किया है। अत: जब तुम उनका वर्णन करो तो कहो नि:संदेह मैं उम्मीद करता हूँ कि मैं उनमें से नहीं हूँ और अल्लाह ने जन्नत वालों का वर्णन केवल उनके नेक-कर्म की वजह से किया है क्योंकि अल्लाह ने उनकी बुराईयों से दरगुज़र कर दिया है। अत: जब तुम उनका वर्णन करो तो कहो क्या मेरे कर्म उनके कर्म जैसे हैं। (अल् कामिल फ़ित्तारीख लेइब्ने असीर, भाग 2 पृष्ठ 273-274 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई.) अपने दिल से पूछो।

जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाने लगे। हमारे पास मुस्लमानों का जो माल है उसे वापस कर दो। मैं उस माल में से कुछ भी लेना नहीं चाहता। मेरी वह ज़मीन जो अमुक अमुक स्थान पर है मुस्लमानों के लिए उन अम्वाल के बदले में है जो मैं ने बतौर गुज़ारा भत्ता बैत-उल-माल से लिया था। यह ज़मीन, ऊंटनी, तलवार सैक़ल करने वाला ग़ुलाम और चादर जो पाँच दिरहम की थी सब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को दे दिया गया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब ये सारा सामान देखा तो कहा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने बाद वाले को कठिनाई में डाल दिया है।(अल् तब्कातुल कुब्रा लाबन भाग 3 पृष्ठ 143 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से किसी ने पूछा था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत में वह तेज़ी नहीं रही जो ज़माना-ए-जाहिलियत में थी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया तेज़ी तो वही है परन्तु अब कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में दिखाई जाती है। (उद्धरित हक़ायलीकुल फ़ुरकान, भाग अव्वल, पृष्ठ 206)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को लोगों ने कहा था कि यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने बाद उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को उत्तराधिकारी निर्धारित किया तो बड़ा ग़ज़ब होगा क्योंकि यह बहुत गुस्से वाले हैं। उन्होंने फ़रमाया कि उनका ग़ुस्सा उसी वक़्त तक गर्मी दिखाता है जब तक कि मैं न रहूं और जब मैं नहीं रहूँगा तो यह ख़ुद नरम हो जाऐंगे।" (अनवार-ए-ख़िलाफ़त, अनवारुल उलूम, भाग 3 पृष्ठ 151)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ुस्सा के विषय में आया है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो से किसी ने पूछा कि इस्लाम से पूर्व आप रज़ियल्लाहु अन्हो बड़े ग़ुस्सा करने वाले थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उत्तर दिया कि ग़ुस्सा तो वही है जबकि पहले बे-ठिकाने चलता था परन्तु अब ठिकाने से चलता

है।''(अहमदी और ग़ैर अहमदी में क्या फ़र्क़ है?,रूहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 487) सही जगह पर ग़ुस्सा इस्तिमाल होता है।

जामें बिन शद्दाद अपने किसी क़रीबी अज़ीज़ से रिवायत करते हैं कि मैं ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को यह कहते हुए सुना कि हे ख़ुदा! मैं ज़ईफ़ हूँ मुझे ताक़तवर बना दे और मैं सख़्त मिज़ाज हूँ मुझे नरम मिज़ाज बना दे और मैं कंजूस हूँ मुझे दानी बना दे।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़ा बनने के बाद जो पहला ख़िताब फ़रमाया इस बारे में भी अलग अलग रवायात मिलती हैं। एक रिवायत में है। हुमैद बिन हिलाल वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के वक़्त जो हाज़िर था उसने हमें बताया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तदफ़ीन से जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ारिग़ हुए तो उन्होंने अपने हाथों से उनकी क़ब्र की मिट्टी को झाड़ा। फिर अपनी जगह पर खड़े हुए और फ़रमाया नि:संदेह अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरे द्वारा से और मुझे तुम्हारे माध्यम से परीक्षा ली है और उसने मेरे दोनों साथियों के बाद मुझे तुम पर बाक़ी रखा है। अल्लाह की क़सम! तुम्हारा जो भी मामला मेरे सामने प्रस्तुत होगा तो मेरे इलावा कोई और उसको नहीं देखेगा और जो मामला मुझसे दूर होगा तो उसके लिए मैं क़वी और अमीन लोगों को निर्धारित करूँगा अर्थात लोग निर्धारित किए जाएंगे जो तुम्हारी निगरानी करेंगे और मामलात को देखेंगे। यदि लोग अच्छा व्यवहार करेंगे तो मैं भी उनसे अच्छा व्यवहार करूँगा और यदि उन्होंने बुराई की तो मैं उन्हें सज़ा दूँगा।

हसन कहते हैं कि हमारा ख़्याल है कि सबसे पहला ख़ुतबा जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इरशाद फ़रमाया वह यह था। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की फिर फ़रमाया। इसके बाद मुझे तुम लोगों के ज़रीया आज़माया गया है और तुम लोग मेरे माध्यम से आज़माए गए हो और मुझे अपने दोनों साथियों के बाद तुम लोगों पर पीछे छोड़ दिया गया। अत: जो मामला हमारे सामने होगा हम उसे ख़ुद देखेंगे और जो मामला हमसे दूर होगा तो हम उस के लिए अच्छे ईमानदार और सच्चे लोग निर्धारित करेंगे और जो अच्छाई करेगा हम उस को भलाई में बढ़ाएंगे और जो बुराई करेगा हम उसे सज़ा देंगे और अल्लाह हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए।

जामें बिन शद्दाद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मिंबर पर चढ़े तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो का सबसे पहला कलाम यह था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ شَدِیْدٌ فَلَیِّنِّیْ وَ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ وَ اِنِّیْ بَخِیْلٌ فَسَخِّنِیْ कि हे अल्लाह!मैं सख़्त हूँ अत: तू मुझे नरम कर दे और मैं कमज़ोर हूँ अत: तू मुझे ताक़तवर बना दे और मैं कंजूस हूँ अत: तू मुझे दानी बना दे। (अल् तब्कातुल कुब्रा लाबन साद, भाग 3 पृष्ठ 208 वर्णन इस्तख़लाफ़ उमर, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.)

जामें बिन शद्दाद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा निर्धारित हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो मंच पर चढ़े और फ़रमाया कि मैं कुछ पंक्तियाँ कहने वाला हूँ तुम उन पर आमीन कहो। यह पहला कलाम था जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़ा निर्धारित होने के बाद किया। हुसैस मुर्री वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अरबों की मिसाल नुकैल में बंधे हुए ऊंट की तरह है जो अपने क़ायद के पीछे चलता है। अत: उसके क़ायद को चाहिए कि वह देखे किस तरफ़ हाँक रहा है और जहां तक मेरा ताल्लुक़ है तो रब-ए-काअबा की क़सम! मैं उन्हें ज़रूर सीधे रस्ते पर रखूँगा। (तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 355 सन् 13 हिज्री, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.) जो पहले वाली रिवायत है इस में यह तो है कि आमीन कहना लेकिन तफ़सील उसकी नहीं वर्णन हुई। या यही नुकैल वाली तफ़सील है।

बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़लीफ़ा निर्धारित होने के बाद तीसरे दिन एक तफ़सीली ख़िताब फ़रमाया। यह इस प्रकार है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लोगों के उनसे भयभीत होने की सूचना पहुंची तो लोगों में उनके हुक्म से الصلوٰةُ جامِعَةٌ कि नमाज़ तैयार है की बुलंद आवाज़ लगाई गई। इस पर लोग हाज़िर हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो मंच पर उस जगह बैठे जहां हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने पांव रखा करते थे। जब पूरा इजतिमा हो गया अर्थात लोग इकट्ठे हो गए तो सीधे खड़े हुए और अल्लाह की प्रशंसा की जो उसके मुनासिब हैं और नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर दुरूद पढ़ा। फिर फ़रमाया कि मुझे यह सूचना पहुंची है कि लोग मेरी तेज़ मिज़ाजी से डर रहे हैं और वे मेरी कुपित होने से भयभीत हो रहे हैं और कहते हैं कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हम पर सख़्ती उस ज़माने में भी किया करता था जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे मध्य उपस्थित थे और फिर हम पर सख़्ती करता रहा जबकि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हम पर हाकिम थे न कि वह, तो अब क्या हाल होगा जबकि कार्यों का पूरा इख़तियार उसी के हाथ में पहुंच गया है? जिसने यह कहा उसने सच्च कहा। बेशक मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ग़ुलाम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ख़ादिम था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसे थे कि कोई व्यक्ति आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नरमी और रहम दिली की सिफ़त तक नहीं पहुंच सकता था। अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इससे पुकारा और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अपने नामों में से दो नाम रऊफ़ और रहीम प्रदान किए और मैं एक खिंची हुई तलवार था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यदि चाहें तो मुझे मयान में कर लें या मुझे छोड़ दें तो मैं काट डालूं। यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वफ़ात पा गए और वह मुझसे ख़ुश थे और अल्लाह का शुक्र है कि मैं इस बिना पर सौभाग्यशाली रहा। फिर लोगों के हाकिम अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हुए तो वह ऐसे लोगों में से थे कि तुम में से कोई उनकी ह्रदय की नर्मी और करम और नरम मिज़ाजी का इंकार करने वाला नहीं है और मैं उनका ख़ादिम और उनका सहायक था। अपनी सख़्ती को उनकी नरमी के साथ मिला देता था और सौंती हुई तलवार बन जाता था और उनके हाथ में होता था कि वह मुझे मयान में बंद कर दें या यदि चाहें तो मुझे छोड़ दें और मैं काट डालूं। तो मैं उनके साथ इसी तरह रहा यहां तक कि अल्लाह तआला ने उनको इस हाल में वफ़ात दी कि वह मुझ से ख़ुश थे। अलहमदो लिल्लाह में इस बिना पर सौभाग्यशाली रहा।

फिर लोगो! मैं तुम्हारे कार्यों का निगरान बन गया हूँ। अब समझ लो कि वह तेज़ी कमज़ोर कर दी गई लेकिन वह मुस्लमानों पर ज़ुलम और अत्याचार करने वालों पर ज़ाहिर होगी। तुम पर कमज़ोर है लेकिन दुश्मनों पर तेज़ी ज़ाहिर होगी। रहे वे लोग जो नेक स्वभाव वाले और धार्मिक और साहब-ए-फ़ज़ीलत हैं मैं उनके साथ इस से भी ज़्यादा नरम साबित हूँगा जो नरमी वे एक दूसरे के साथ करते हैं और मैं किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं पाऊँगा जो दूसरे पर ज़ुलम और अत्याचार करता होगा परन्तु मैं उसके गाल को ज़मीन पर डाल कर अपना पांव उसके दूसरे गाल पर रखूँगा यहां तक कि वह हक़ को अच्छी तरह समझ ले अर्थात बहुत सख़्ती करूँगा। और हे लोगो! तुम्हारे मुझ पर बहुत से हुक़ूक़ हैं जो मैं तुमसे वर्णन करता हूँ तुम उन पर मेरी गिरिफ़त कर सकते हो। तुम्हारा मुझ पर यह हक़ है कि मैं इस माल में से जो तुम पर ख़र्च करना है कोई वास्तु तुम से छुपा कर न रखूं और न उस में से जो अल्लाह तआला ग़नीमतों में से तुम्हारे लिए भेजे अतिरिक्त उस के जो अल्लाह तआला के काम के लिए रोकूँ। और तुम्हारा मुझ पर यह हक़ है कि वह माल अपने हक़ के अवसर पर ख़र्च हो और तुम्हारा मुझ पर यह हक़ है कि मैं तुम्हारे वज़ाइफ़ और अधिकार तुम को देता रहूं और तुम्हारा मुझ पर यह हक़ भी है कि मैं तुमको हलाकत के स्थानात में न डालूं और जब तुम लश्कर में शामिल हो कर घर से ग़ायब रहो तो मैं तुम्हारे बाल बच्चों का बाप बना रहूं यहां तक कि तुम उनके पास वापस आओ। मैं अपनी यह बात कह रहा हूँ और अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए मग़फ़िरत चाहता हूँ। (ازالة الخفاء عن خلافة الخلفاء مترجم از شاه ولی الله محدث دهلوی भाग 3 पृष्ठ 226 से 228 प्रकाशन क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "मुस्लमानों की आँखों के सामने हर वक़्त यह आयत रहती थी कि تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓی اَهْلِهَا अर्थात जो लोग हुकूमत के काबिल हों, जो इंतेज़ामी उमूर को सँभालने की अहलीयत अपने अंदर रखते हों उनको यह अमानत सपुर्द किया करो और फिर जब यह अमानत कुछ लोगों के सपुर्द हो जाती थी तो शरीयत का यह हुक्म हर वक़्त उनकी आँखों के सामने रहता था कि दयानतदारी और अदल के साथ हुकूमत करो। यदि तुमने अदल को नज़र अंदाज कर दिया, यदि तुम ने दियानतदारी को दृष्टिगत नहीं रखा, यदि तुमने उस अमानत में किसी ख़ियानत से काम लिया तो ख़ुदा तुमसे हिसाब लेगा और वह तुम्हें इस जुर्म की सज़ादे गा। यही वह चीज़ थी जिसका असर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत पर इस क़दर ग़ालिब और नुमायां था कि उसे देखकर इन्सान के रौंगटे खड़े हो जाते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जो इस्लाम में ख़लीफ़ा सानी गुज़रे हैं उन्होंने इस्लाम और मुस्लमानों की तरक़्क़ी के लिए इस क़दर क़ुर्बानीयों से काम लिया है कि वह यूरोपियन लेखक जो दिन रात रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर एतराज़ात करते रहते हैं, जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय में अपनी किताबों में निहायत ढिटाई के साथ

यह लिखते हैं कि नऊज़-बिल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दियानतदारी से काम नहीं लिया वह भी अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन पर यह तस्लीम किए बग़ैर नहीं रह सकते कि जिस मेहनत और क़ुर्बानी से उन लोगों ने काम किया है उस किस्म की मेहनत और क़ुर्बानी की मिसाल दुनिया के किसी हुकमरान में नज़र नहीं आती। विशेषता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के काम की तो वह बेहद तारीफ़ करते हैं और कहते हैं कि यह वह व्यक्ति था जिसने रात और दिन दिलो जान के साथ इस्लाम के कानूनों का प्रचार और मुस्लमानों की तरक़्क़ी के फ़र्ज़ को सरअंजाम दिया परन्तु उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का अपना क्या हाल था? इसके सामने बावजूद हज़ारों काम करने के, बावजूद हज़ारों क़ुर्बानियां करने के, बावजूद हज़ारों तकालीफ़ बर्दाश्त करने के यह आयत रहती थी कि اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا اور یہ کہ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ۔ अर्थात जब तुम्हें ख़ुदा की तरफ़ से किसी के काम पर निर्धारित किया जाए और तुम्हारे देश के लोग और तुम्हारे अपने भाई हुकूमत के लिए तुम्हारा इंतिख़ाब करें तो तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम अदल के साथ काम करो और अपनी समस्त शक्तियाँ को लोगों की प्रगति के लिए खर्च करों। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह वाक़िया कैसा दर्दनाक है कि वफ़ात के क़रीब जबकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़ालिम समझते हुए एक व्यक्ति ने नादानी और जहालत से ख़ंजर से आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर वार किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अपनी मौत का यक़ीन हो गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो बिसतर पर निहायत दर्द से तड़पते थे और बार-बार कहते थे اَللّٰهُمَّ لَا عَلَيَّ وَلَا لِيَ۔ اَللّٰهُمَّ لَا عَلَيَّ وَلَا لِيَ हे ख़ुदा तू ने मुझ को इस हुकूमत पर क़ायम किया था और एक अमानत तू ने मेरे सपुर्द की थी। मैं नहीं जानता कि मैं ने उस हुकूमत का हक़ अदा कर दिया है या नहीं। अब मेरी मौत का वक़्त क़रीब है और मैं दुनिया को छोड़ कर तेरे पास आने वाला हूँ। हे मेरे रब मैं तुझसे अपने कर्म के बदला में किसी अच्छे अज्र का तालिब नहीं, किसी इनाम का ख़ाहिशमंद नहीं बल्कि हे मेरे रब मैं सिर्फ इस बात का तालिब हूँ कि तू मुझ पर रहम करके मुझे माफ़ फ़र्मा दे और यदि इस ज़िम्मेदारी की अदायगी में मुझसे कोई क़सूर हो गया हो तो उससे दरगुज़र फ़र्मा दे। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वह महान इन्सान था जिसके अदल और इन्साफ़ की मिसाल दुनिया के पर्दे पर बहुत कम पाई जाती है परन्तु इस हुक्म के अधीन कि وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ۔ जब वह मरता है तो ऐसी बेचैनी और ऐसे दर्द की हालत में मरता है कि उसे वे समस्त ख़िदमात जो उसने मुल्क की बेहतरी के लिए कीं, वे समस्त ख़िदमात जो उसने लोगों की बेहतरी के लिए कीं, वे समस्त ख़िदमात जो उसने इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए कीं बिल्कुल तुच्छ नज़र आती हैं। वे समस्त ख़िदमात जो उसके मुल्क के समस्त मुस्लमानों को अच्छी नज़र आती थीं, वे समस्त ख़िदमात जो उसके मुल्क की ग़ैर अक़्वाम को भी अच्छी नज़र आती थीं, वे समस्त ख़िदमात जो न केवल उसके मुल्क के अपनों और ग़ैरों को ही नहीं बल्कि ग़ैर देशों के लोगों को भी अच्छी नज़र आती थीं, वे समस्त ख़िदमात जो केवल उसके ज़माना में ही लोगों को अच्छी नज़र आती थीं बल्कि आज तेराह सौ साल गुज़रने के बाद भी वे लोग जो उसके आक़ा पर हमला करने से नहीं चूकते जब उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमात का वर्णन आता है तो कहते हैं बे-शक उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपने कारनामों में एक बेमिसाल व्यक्ति था। वे समस्त ख़िदमात ख़ुद उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की निगाह में बिल्कुल तुच्छ हो जाती हैं और वह तड़पते हुए कहता है اَللّٰهُمَّ لَا عَلَيَّ وَلَا لِيَ۔ हे रब! एक अमानत मेरे सपुर्द की गई थी। मैं नहीं जानता कि मैं ने उसके हुक़ूक़ को अदा भी किया है या नहीं। इस लिए मैं तुझसे इतनी ही दरख़ास्त करता हूँ कि तू मेरे क़ुसूरों को माफ़ फ़र्मा दे और मुझे सज़ा से महफ़ूज़ रख।" (इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 11 से 13)

फिर अपनी एक तक़रीर "दुनिया का मौहसिन" में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वह इन्सान थे जिनके विषय में" वैसे यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में था। "ईसाई मुर्ख़ भी लिखते हैं कि उन्होंने ऐसी हुकूमत की जो दुनिया में और किसी ने नहीं की। वे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को गालियां देते हैं परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तारीफ़ करते हैं। ऐसा व्यक्ति हर वक़त की सोहबत में रहने वाला मरते वक़्त यह हसरत रखता है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दमों में उसे जगह मिल जाए। यदि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के किसी कर्म से भी यह बात ज़ाहिर होती कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा की रज़ा के लिए काम नहीं करते तो क्या हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसा इन्सान इस दर्जा को पहुंच कर कभी यह इच्छा करता कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़दमों में स्थान पाए।"

(दुनियां का मुहसिन, अनवारुल उलूम, भाग 10 पृष्ठ 262)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु यह साबित कर रहे हैं कि यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी की वजह थी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तर्बीयत थी जिसकी वजह से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो में यह इन्साफ़ के काम थे और यह ख़ौफ़-ए-ख़ुदा था।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की अहले बेयत से अक़ीदत का क्या इज़हार था? इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा देर तक रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद ज़िंदा रही थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जब ईरान फ़तह हुआ तो वहां से आटा पीसने वाली हवाई चक्कियां लाई गईं। जिनमें बारीक आटा पीसा जाने लगा। जब सबसे पहली चक्की मदीना में लगी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हुक्म दिया कि पहला पिसा हुआ बारीक आटा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में बतौर तोहफ़ा भेजा जाए। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हुक्म के अनुसार वह बारीक मैदा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ख़िदमत में भेजा गया और उनकी ख़ादिमा ने इस आटे के बारीक बारीक फुल्के तैयार किए। मदीना की औरतें जिन्हों ने पहले कभी ऐसा आटा नहीं देखा था वह भीड़ करके हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में जमा हो गईं कि आओ हम देखें वह आटा कैसा है और इस की रोटी कैसी तैयार होती है? सारा सेहन औरतों से भरा हुआ था और सब इस इंतिज़ार में थे कि इस आटे की रोटी तैयार हो तो वे उसे देखें। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो महिलाओं को सम्बोधित कर रहे थे। उनको सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं कि तुम ख़्याल करती होगी कि शायद वह कोई अजीब किस्म का आटा होगा। वह अजीब किस्म का आटा नहीं था बल्कि इस से भी अदना आटा था जो तुम रोज़ाना खाती हो बल्कि इस से भी अदना आटा था। आज जो आटा तुम में से एक ग़रीब से ग़रीब औरत खाती है इस से भी वह अदना था। परन्तु मदीना में जिस किस्म के आटे होते थे उनसे वह बहुत उत्तम था। बहरहाल आटे के फुल्के तैयार हुए। औरतों ने उनको देखा और वे हैरान रह गईं। वे शौक़ में अपनी उंगलियां उन फुलकों को लगातीं और सहसा कहतीं। उफ़्ह कैसा नरम फुलका है। क्या इससे अच्छा आटा भी दुनिया में हो सकता है?

रोटी तो पक गई लेकिन यहां से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इशक़-ओ-मुहब्बत की कहानी शुरू होती है और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में क्या जज़बात थे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फुल्के में से, इस छोटी सी रोटी में से एक लुक़मा तोड़ा और मुँह में डाला। वे सारी की सारी औरतें जो वहां खड़ी थीं इस शौक़ से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का मुँह देखने लगीं कि इस के खाने से हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की अजीब हालत होगी। नरम फुलका है खा के वह मज़ा लेंगी। वह ख़ुशी का इज़हार करेंगी और ख़ास किस्म की लज़्ज़त इस से महसूस करेंगी। परन्तु हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुँह में वह लुक़मा गया तो जिस तरह किसी ने गला बंद कर दिया हो। वह लुक़मा उनके मुँह में ही पड़ा रह गया और उनकी आँखों में से टप टप आँसू गिरने लगे। औरतों ने कहा। बी-बी आटा तो बड़ा ही अच्छा है। रोटी इतनी नरम है कि इस की कोई हद ही नहीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को क्या हो गया है कि उसे निगल ही नहीं सकीं और रोने लग गईं? क्या इस आटे में कोई नुक़्स है? हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया। आटे में नुक़्स नहीं। मैं मानती हूँ कि यह बड़ा ही नरम फुलका है और ऐसी चीज़ पहले हमने कभी नहीं देखी परन्तु मेरी आँखों से इस लिए आँसू नहीं बहे कि इस आटे में कोई नुक़्स है बल्कि मुझे वे दिन याद आगए जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी आख़िरी उमर में से गुज़र रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कमज़ोर हो गए थे और सख़्त आहार नहीं खा सकते थे परन्तु उन दिनों में भी हम पत्थरों से गंदुम कुचल कर और उसकी रोटियाँ पका पका कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देते थे। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया। वह जिसके तुफ़ैल हमको यह नेअमतें मिलीं वह तो इन नेअमतों से वंचित चला गया लेकिन हम जिन्हें उसके तुफ़ैल से यह सब इज़्ज़तें मिल रही हैं हम वह नेअमतें इस्तिमाल कर रहे हैं। यह कहा और लुक़मा थूक दिया और फ़रमाया। उठा ले जाओ यह फुल्के मेरे सामने से। मुझे रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़माना याद आ कर गले में फंदा पड़ता है और में यह फुलका नहीं खा सकती। (उद्धरित आइन्दा वही कौमें इज़्ज़त पाएँगी जो माली और जानी क़ुर्बानीयों में हिस्सा

लेंगी, अनवारुल उलूम जिल्द 21पृष्ठ 155-156)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में अस्हाब-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदाइन को फ़तह किया। (मदाइन किसरा की तख़तगाह था) तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको मस्जिद में चमड़े की चटाई बिछाने का हुक्म दिया और अम्वाल-ए-ग़नीमत के बारे में हुक्म दिया जो इस चटाई पर उंडेल दिए गए। फिर अस्हाब-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जमा हुए तो सबसे पहले जिसने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से माल-ए-ग़नीमत लेने का आरंभ किया वह हज़रत हसन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो थे। उन्होंने अर्ज़ किया हे अमीरुल मोमनीन जो माल अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को अता फ़रमाया है इस में से मेरा हक़ मुझे अता फ़रमाएं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको कहा बड़ी ख़ुशी से और इज़्ज़त से और उनको एक हज़ार दिरहम देने का हुक्म फ़रमाया। फिर वह अर्थात हसन रज़ियल्लाहु अन्हो चले गए और हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हो आपकी तरफ़ आगे बढ़े और अर्ज़ किया हे अमीर-ऊल-मोमनीन जो माल अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को अता फ़रमाया उस में से मेरा हक़ मुझे अता फ़रमाएं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको कहा बड़ी ख़ुशी से और इज़्ज़त के साथ और उनको एक हज़ार दिरहम देने का हुक्म फ़रमाया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे अबदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आपकी तरफ़ आगे बढ़े और अर्ज़ किया हे अमीर-ऊल-मोमनीन जो माल अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को अता फ़रमाया है उस में से मेरा हक़ मुझे अता फ़रमाएं। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको कहा बड़ी ख़ुशी और इज़्ज़त के साथ और उन्हें पाँच सौ दिरहम देने का हुक्म फ़रमाया। इस पर अबदुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया। हे अमीर-ऊल-मोमनीन मैं एक ताक़तवर मर्द हूँ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने तलवार चलाया करता था और हसन और हुसैन उस वक़्त बच्चे थे जो मदीना की गलियों में फिरा करते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन दोनों को एक एक हज़ार दिरहम दिए हैं और मुझे पाँच सौ। फ़रमाया : हाँ जाओ और मेरे पास ऐसा बाप ले के आओ जैसा उन दोनों का बाप है और माँ जो उन दोनों की माँ के जैसी हो और नाना जो उन दोनों के नाना जैसा हो और नानी जो उन दोनों की नानी जैसी हो और चचा जो उन दोनों के चचा जैसा हो और मामूं जो उन दोनों के मामूओं जैसा हो और ख़ाला जो उन दोनों की ख़ाला जैसी हो और नि:संदेह तू मेरे पास नहीं ला सकेगा। (उद्धरित ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء مترجم از شاہ ولی اللہ محدث دھلوی، جلد 3،صفحہ 292-293. प्रकाशन क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 264 ज़व्वार एकेडेमी कराची 2004 ई.)

अबू जाफ़र से मर्वी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब इरादा किया कि लोगों के लिए वज़ीफ़े निर्धारित कर दें और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की राय सब लोगों की राय से बेहतर थी तो लोगों ने अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो आपनी ज़ात से शुरू करें। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया नहीं। इसलिए आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सबसे क़रीबी रिश्तेदार से शुरू किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने पहले हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो का और फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो का हिस्सा निर्धारित किया। (उद्धरित ازالۃ الخفاء عن خلافۃ الخلفاء مترجم از شاہ ولی اللہ محدث دھلوی، جلد 3،صفحہ 241 ،प्रकाशन क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु अन्हो और इमाम हुसेन रज़ियल्लाहु अन्हो की इज़्ज़त करते थे और उनको सवारा करते और उन दोनों को अता करते थे जैसे उनके पिता को अता किया करते थे। एक दफ़ा यमन से कुछ हुल्ले अर्थात कपड़ों के जोड़े आए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें सहाबा के बेटों में तक़सीम कर दिया और उन दोनों को उनमें से कुछ नहीं दिया फ़रमाया : अलिफ उनमें इन दोनों के योग्य कोई चीज़ नहीं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने यमन के नायब को पैग़ाम भेजा तो उसने इन दोनों के मुनासिब-ए-हाल हुल्ले बनवाए। (البدایۃ والنہایۃ، جلد 4 ،جزء 8، باب فضل ذکر فی شیء من فضائلہ، صفحہ 214-215 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 2001ई.)

यह वर्णन इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा भी चलेगा इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का भी वर्णन करना चाहता हूँ। नमाज़ के बाद नमाज़-ए-जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

उनमें से पहला वर्णन है सुहेला महबूब साहिबा पत्नी फ़ैज़ अहमद साहिब गुजराती दरवेश मरहूम जो नाज़िर बैतुल माल थे। सुहेला साहिबा की नब्बे वर्ष की आयु में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। यह बिहार के एक तालीम याफ़ता घराने से ताल्लुक़ रखती थीं। उनके पिता अहमदी नहीं थे लेकिन उनके पिताा अपने पिता की बैअत के बाद ख़ुद अध्यन करके अहमदियत में शामिल हुए और तीन चार वर्ष तक अपने पति की बेरुख़ी से बहुत तकलीफ़ भी उठाई लेकिन अहमदियत पर साबित-क़दम रहीं। उनके पति अहमदी तो नहीं हुए लेकिन बाद में मुख़ालिफ़त तर्क कर दी और बेटियों के रिश्ते भी अहमदी घरानों में हुए। इस तरह सुहेला साहिबा का भी रिश्ता अहमदियों में हुआ। 1958 ई. में मरहूमा के पिताा अपनी बेटी सुहेला महबूब के साथ पहली बार क़ादियान आएं। सुहेला महबूब साहिबा कहती हैं उनको क़ादियान की बस्ती से बहुत प्रेम हो गया। बहुत दुआएं कीं कि किसी तरह वह क़ादियान में ही आबाद हो जाएं। बहरहाल उन्होंने ज़िंदगी वक़्फ़ की। उस वक़्त नाज़िर ख़िदमत दरवेशान हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ियल्लाहु अन्हो थे। इसलिए उन्होंने ज़िंदगी वक़्फ़ के पत्र के उत्तर में उनको लिखा कि मुझे आपके वक़्फ़ का इलम हुआ है और आपका यह कार्य बड़ी क़दर के योग्य है। वक़्फ़ के अधीन आपका प्रथम फ़र्ज़ है कि दीन का इलम सीखें। अपने कर्म को इस्लाम और अहमदियत के अनुसार बनाएँ ताकि बेहतरीन उदाहरण क़ायम हो इसलिए 1964 ई. में यह बहरहाल वक़्फ़ हुए। 1964 ई. में मरहूमा की शादी चौधरी अबदुल्लाह साहिब दरवेश से हुई। उनसे एक बेटी पैदा हुई लेकिन कुछ देर बाद अलैहदगी हो गई। फिर उनकी दूसरी शादी चौधरी फ़ैज़ अहमद साहिब गुजराती दरवेश से हुई। उनसे एक लड़का पैदा हुआ लेकिन वह बचपन में फ़ौत हो गया। मरहूमा को रिटायरमैंट तक तक़रीबन तीस साल नुसरत गर्लज़ हाई स्कूल क़ादियान में बतौर हैड मिस्टरस ख़िदमत का अवसर मिला।

दूसरा वर्णन राजा ख़ुरशीद अहमद मुनीर साहिब मुरब्बी सिलसिला का है जो आजकल आस्ट्रेलिया में थे वहां उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी थे। उनको लंबा अरसा पाकिस्तान और कश्मीर के विभन्न क्षेत्रों में बतौर मुरब्बी सिलसिला ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। एक निडर मुरब्बी सिलसिला थे। कश्मीर में ख़िदमत के दौरान आपको बहुत मुख़ालिफ़त का भी सामना करना पड़ा। 74 ई. के कठोर हालात के दौरान बड़ी बहादुरी से मुख़ालिफ़त का सामना किया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहम्हुल्लाह तआला ने एक मीटिंग में आपके बारे में यह फ़रमाया कि वहां हमारा एक बहादुर मुरब्बी है। "बहादुर मुरब्बी" के नाम से नवाज़ा । राजा ख़ुरशीद अहमद मुनीर साहिब ने रावलपिंडी में अपना एक घर भी ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहम्हुल्लाह तआला के ज़माने में जमाअत को बतौर अतिया दिया और उन्होंने उनके अतीए को क़बूल फ़रमाया।

राजा साहिब तक़सीम पाकिस्तान और भारत के बाद अहमद नगर चले गए थे। जामिआ अहमदिया का जहां क़ियाम अमल में आया था वहां यह पढ़ते रहे। अख़राजात पूरे करने के लिए उन्होंने कमरे में ही एक छोटी सी दुकान खोल ली। फिर 1948 ई. में फुर्क़ान बटालियन में भी शामिल हुए। 49ई. में मौलवी फ़ाज़िल का परीक्षा पास किया और जामिआ की शाहिद की पहली क्लास से परीक्षा पास करने के बाद मुरब्बी सिलसिला की हैसियत से पाकिस्तान के विभन्न स्थानात और कश्मीर में दीनी ख़िदमात अंजाम दें। 1974 ई. में उनके घर पर हमला हुआ लेकिन आपने बड़ी बहादुरी से मुक़ाबला किया और हुजूम के पथराओ से ज़ख़मी भी हुए लेकिन बहरहाल सब घर वाले महफ़ूज़ रहे। आप हमेशा साबित क़दमी की तलक़ीन किया करते थे और फ़रमाया करते थे कि इलाही जमाअतों पर ऐसे इबतिला आते हैं, परीक्षा ली जाती हैं। और इन हालात में भी बड़ी जुर्रत के साथ जमाअतों का दौरा किया करते थे। लोगों के घरों में जाया करते थे और कई दफ़ा ऐसा हुआ कि इस दौरे के दौरान जहां लोगों को, जमाअत के लोगों को मिलने जाते थे लोगों ने उनको पकड़ा और मारा लेकिन कभी उन्होंने कोई शिकवा नहीं किया। उनके चार बेटे और चार बेटियां हैं। आजकल आस्ट्रेलिया में थे। वहीं उनकी वफ़ात हुई है।

अगला वर्णन ज़मीर अहमद नदीम साहिब का है। छप्पन वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनको कैंसर की तकलीफ़ थी। उनके पड़दादा रहीम बख़श साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से 1897 ई. में उनके ख़ानदान में अहमदियत आई और जब उनके पड़दादा ने सुना कि इमाम महदी आ गए हैं तो अपने गांव शिकारपुर माछयां, यह ज़िला गुरदासपुर में गांव था, वहां से क़ादियान जलसे में शिरकत के लिए गए और बैअत करली। फिर अपने एक अज़ीज़ महरदीन साहिब को बताया वह भी गए उन्होंने भी बैअत कर ली और फिर उनकी तब्लीग़ से तक़रीबन पूरा गांव ही अहमदी हो गया।

ज़मीर साहिब ने जामिआ पास करने के बाद इस्लाह-ओ-इरशाद मकामी के अधीन कुछ अरसा मैदान-ए-अमल में काम किया। फिर दफ़्तर मंसूबा बंदी कमेटी में उनकी तक़र्ररी हुई। फिर नज़ारत इस्लाह-ओ-इरशाद मर्कज़िया के अधीन ख़िदमत की तौफ़ीक मिली। 2005 ई. से वफ़ात तक यह मुआविन नाज़िर वसीयत विभाग इस्तिक़बालीया थे। अल्लाह तआला ने उनको एक बेटे और बेटी से नवाज़ा। उनके बेटे भी मुरब्बी सिलसिला हैं। सम्पर्क भी उनको ख़ूब बनाने आते थे। बस्किट बाल के खिलाड़ी भी अच्छे थे। इस वजह से ताल्लुक़ात होते थे और फिर जमाअत के लिए इस ताल्लुक़ का इस्तिमाल भी करते थे, फ़ायदा भी उठाते थे। तहज्जुद गुज़ार थे। अल्लाह तआला पर भरोसा बहुत ज़्यादा था। मुश्किल वक़्त में तुरंत दो नफ़ल पढ़ना और ख़लीफ़ा वक़्त को पत्र लिखना उनकी आदत थी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनकी दुआओं और नवाफ़िल को अल्लाह तआला क़बूल भी फ़रमाता था।

अगला वर्णन आदरणीय ईसा मवाकी तलीमा (Issa Mwaki Talima) साहिब का है। यह तनज़ानिया के हैं। पिछले दिनों में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह ईसाई घराने में पैदा हुए थे। 19 वर्ष की आयु में इर्द-गिर्द के माहौल की वजह से मज़हबी बात चीत में दिलचस्पी पैदा हुई। और इस्लाम क़बूल करने की सआदत हासिल की। कुछ वर्ष बाद जमाअत के अक़ायद से परिचय हुआ और तहक़ीक़ करने के बाद 1992 ई. में बैअत कर के जमाअत अहमदिया में शामिल हो गए। बैअत के बाद मरहूम के अंदर एक पवित्र तबदीली पैदा हुई जो उनके क़रीबियों को भी वाज़िह तौर पर महसूस होती थी और उनकी इस पाक तबदीली को देख कर उनकी पत्नी ने भी बैअत कर ली। बैअत के बाद मरहूम ने अपना दीनी इलम बढ़ाने के लिए बहुत मेहनत की। अपने काम के दौरान भी इस्लाम अहमदियत की तब्लीग़ का अवसर हाथ से नहीं जाने देते थे। चंदाजात की अदायगी में हमेशा आगे आगे रहते। कई मर्तबा इज़हार किया कि ख़ुदा की राह में देने से कारोबार और माल में बरकत पड़ती है। उनका कारोबार था। बहुत ही मिलनसार ख़ुश अख़लाक़ और विनम्र इन्सान थे। वाकफ़ीन ज़िंदगी, जमाअती ओहदेदारान और कारकुनान से बहुत इज़्ज़त के साथ पेश आते थे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में दो पत्नियाँ और दस बच्चे शामिल हैं।

अमीर और मिशनरी इंचार्ज तनज़ानिया लिखते हैं कि मरहूम को दारुस्सलाम का रीजनल प्रैज़ीडैंट निर्धारित किया गया। उनकी तबीयत में सादगी नुमायां थी जिसकी वजह से लोगों के दिलों में घर कर लेते थे। ख़ामोश ख़िदमत करने वाले बुज़ुर्ग थे। फिर यह नायब अमीर तनज़ानिया निर्धारित हुए और इस काम में भी बड़े आला रंग में अपनी ख़िदमात सरअंजाम दी। बहुत ही उत्तम राय रखने वाले बुज़ुर्ग थे। हमेशा जमाअती निज़ाम की इज़्ज़त और सम्मान का ख़्याल रखा करते थे। अहमदियों को आपस में बाहमी रवादारी के साथ रहने और ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से वाबस्ता हो जाने की हमेशा तलक़ीन करते रहते थे। जमाअती कारकुनान की ज़ाती ज़रूरीयात का भी ख़्याल रखा करते थे। हर मुम्किन सहयोग की कोशिश करते थे बल्कि कारकुनान को सुबह अपने काम पर जाते हुए अपनी गाड़ी में ले के दफ़्तर आते थे ताकि बसों में आते हुए उनका वक़्त ज़ाए न हो। अपने घर में एक कमरा नमाज़ सैंटर के तौर पर बनाया हुआ था जहां नमाज़ें अदा की जाती थीं। वसीयत करने वालों को हिस्सा जायदाद की अदायगी के लिए जब तहरीक की गई तो उन्होंने सबसे पहले अपनी दो क़ीमती जायदादों का मूल्यांकन करवया और हिस्सा जायदाद की अदायगी कर दी।

अगला वर्णन आदरणीय शेख़ मुबश्शिर अहमद साहिब सुपरवाइज़र निज़ामत तामीरात क़ादियान का है जो शेख़ ईसरार अहमद साहिब केरंग ओडीसा इंडिया के बेटे थे। उनकी भी पिछले दिनों में कौरोना की वजह से वफ़ात हुई। उनकी आयु तेंतीस वर्ष थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम पैदाइशी अहमदी थे। पुराने अहमदी ख़ानदान में से उनका ख़ानदान है। निहायत बाअख़लाक़ नमाज़ी और ख़िदमते दीन के लिए तैयार रहने वाले ख़ादिम सिलसिला थे। बचपन से ही मस्जिद के साथ ख़ास ताल्लुक़ था। आठ सालों से मरहूम निज़ामत तामीरात क़ादियान में बहुत ख़ुश-उस्लूबी से बतौर सुपरवाइज़र ख़िदमत बजा ला रहे थे और बड़ी संजीदगी से काम करने वाले थे। गहराई में जा कर अपने काम को देखते थे। पीछे रहने वालों मैं विधवा पत्नी के अतिरिक्त माता पिता दो भाई और एक बहन शामिल हैं।

अगला वर्णन आदरणीय सैफ अली शाहिद साहिब का है जिनकी सिडनी में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह के फ़ज़ल से मूसी थे। उनके नन्हियाल की तरफ़ से सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम चौधरी मुहम्मद अली साहिब थे और चौधरी गामे ख़ान साहब थे जिनके यह नवासे और पड़ नवासे थे। हैदर अली ज़फ़र साहिब उनके भाई हैं जो मुबल्लिग़ सिलसिला जर्मनी हैं और आजकल नायब अमीर हैं। यह कहते कि 1961ई. में यह मैट्रिक करके हैदराबाद में मुलाज़िम हो गए। फिर इसके बाद हम दो भाईयों की तालीम का ख़र्च भी उठाते रहते थे। हमारे अख़राजात पूरे करते थे और माता पिता की भी बड़ी बेलौस हो कर उन्होंने ख़िदमत की। निहायत मिलनसार, नरम स्वभाव और विनम्र इन्सान थे। बच्चों से शफ़क़त और नौजवानों से मुहब्बत से पेश आते थे। निज़ाम जमाअत और ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा मुहब्बत और इताअत का ताल्लुक़ था। हमेशा अपने बच्चों को भी ख़िलाफ़त से मुहब्बत और इताअत का दरस दिया। ओहदेदारों का बहुत सम्मान करते थे। किसी भी ओहदेदार के ख़िलाफ़ कभी कोई बात सुन्ना गवारा नहीं करते थे। बहुत ही दुआ-गो इन्सान थे। नमाज़ तहज्जुद अदा करते थे। नमाज़ों को सँवार कर अदा करने वाले थे। पाकिस्तान में जब यह थे तो बतौर सैक्रेटरी माल, सैक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर मीरपुर ख़ास में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने उनको सदर जमाअत निर्धारित फ़रमाया और इमारत के क़ियाम तक यह वहां सदर जमाअत रहे। डाक्टर अब्दुल मन्नान सिद्दीक़ी साहिब की शहादत के बाद उनको स्थानीय अमीर और अमीर ज़िला की ख़िदमत की भी तौफ़ीक़ मिली और आस्ट्रेलिया रवानगी तक आप वहां अमीर ज़िला मीरपुर ख़ास रहे। ज़ेली तन्ज़ीमों में भी उनको काफ़ी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इसी तरह आस्ट्रेलिया में क़ज़ा बोर्ड के मैंबर थे। नायब सदर अव्वल अंसारुल्लाह थे और इसी तरह जमाअत में 2016 ई. से सैक्रेटरी रिश्ता नाता के तौर पर काम कर रहे थे। दो बेटे भी उनकी ज़िंदगी में फ़ौत हुए और बड़े सब्र से उन्होंने उनके सदमे को बर्दाश्त किया। बहरहाल पीछे रहने वालों में पत्नी के अतिरिक्त उनके चार बेटे शामिल हैं।

अगला वर्णन आदरणीय मसऊद अहमद हयात साहिब इब्न रशीद अहमद हयात साहिब का है जिनकी अस्सी वर्ष की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में भी अहमदियत उनके दादा हज़रत बाबू उमर हयात साहिब इब्न चौधरी पीर बख़श साहिब के माध्यम से आई थी। उमर हयात रज़ियल्लाहु अन्हो चौदह वर्ष की आयु में 1898 ई. में बैअत करके सिलसिला अहमदिया में दाख़िल हुए थे। पहले फ़ौज में मुलाज़मत की फिर वह कीनीया चले गए। मसऊद हयात साहिब 1967 ई. में कीनीया से यू.के आ गए और फिर यहीं मुस्तक़िल रिहायश हो गई। निहायत नफ़ीस स्वभाव, नमाज़ क़ुरआन के पाबंद थे। ख़ुश अख़लाक़, मिलनसार, मेहमान नवाज़, विनम्र इन्सान थे। दो मर्तबा उनको हज करने की तौफ़ीक़ मिली। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला के साथ विभन्न देशों के दौरा जात में ड्राइविंग और सैक्योरिटी की ख़िदमत सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ मिली। 1983 ई. में जब बैतुल अहद मस्जिद वालथम सटो (walthamstow) में ख़रीदी गई तो इस में सबसे ज़्यादा हिस्सा मरहूम और उनकी पत्नी ताहिरा हयात साहिबा मरहूमा का था। अल्लाह तआला ने आप पर माली लिहाज़ से ख़ास फ़ज़ल फ़रमाया हुआ था और इस माल का बहुत हिस्सा वह अल्लाह तआला की राह में ख़र्च भी किया करते थे। जब रैडबिरज (redbridge) ईस्ट लंदन की जमाअत अलग हुई तो इस जमाअत के पास अपनी कोई मस्जिद नहीं थी। जब उनको इलम हुआ तो आपने अपने घर का एक हिस्सा जमाअत के लिए वक़्फ़ कर दिया। जहां तीन वर्ष तक जमाअत सैंटर क़ायम रहा और जमाअत के विभन्न काम भी वहां होते थे। उनके दो बेटे हैं। पहली पत्नी तो फ़ौत हो गई थीं। दूसरी पत्नी हैं और दो बेटे हैं।

अल्लाह तआला इन समस्त मरहूमीन से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए और उनकी नसलों को भी अहमदियत के साथ जोड़े रखे और आगे नसलों के हक़ में इन बुज़ुर्गों की दुआएं भी क़बूल हों। नमाज़ के बाद जैसा कि मैं ने कहा नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

पृष्ठ 2 का शेष

इस्लाम में है। इस्लाम हमें सिखाता है कि केवल अल्लाह से मुहब्बत करो। इस्लाम पर एक ऐसा ज़माना आया कि वह कमज़ोर हो गया। फिर इमाम महदी पधारे और इस्लाम को दुबारा ज़िंदा कर दिया। अल्लाह से ऐसे मुहब्बत करो मानो तुम उसको देख रहे हो परन्तु यदि आप अल्लाह को नहीं देख सकते तो वह आपको देख रहा है। हे ईमानदारो! अल्लाह से डरो। और अहमदी मुस्लमान होने के अवस्था के अतिरिक्त कभी तुम्हारी मौत न हो।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार ख़ुद्दाम के एक ग्रुप ने जर्मन भाषा में दुआइया नज़म सुंदर आवाज़ के साथ प्रस्तुत की।

इसके बाद इतफ़ाल के एक ग्रुप ने दुआइया नज़म और तराना प्रस्तुत किया और इतफ़ाल के एक दूसरे ग्रुप ने भी दुआइया नज़म प्रस्तुत की।

ख़ुद्दाम के एक ग्रुप ने भी एक तराना प्रस्तुत किया। अंत में जामिया अहमदिया जर्मनी के विद्यार्थी ने ख़िलाफ़त के साथ अहद-ए-वफ़ा का सम्बन्ध बाँधने के विषय पर आधारित दुआइया नज़म प्रस्तुत की। बड़े रूह-परवर माहौल में ये सब नज़्में और तराने प्रस्तुत किए जा रहे थे। जूंही यह प्रोग्राम अपने अंत को पहुंचा जमाअत के लोग ने बड़े जोश के साथ नारे बुलंद किए और सारा माहौल नारों की सदा से गूंज उठा। हर छोटा बड़ा, जवान, बूढ़ा अपने प्यारे आक़ा से अपनी अक़ीदत और मुहब्बत और फ़िदाईत का प्रकटन बड़े जोश और भवना से कर रहा था। यह जलसा के अंत के अलविदाई क्षण थे और दिल इशक़ और मुहब्बत के भावनाओं से भरे हुए थे और आँखें पर नमी थीं। इस माहौल में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके अपनेप्यारों को अस्सलामो अलैकुम और ख़ुदा हाफ़िज़ कहा और नारों के साथ जलसा गाह से बाहर पधारे और कुछ देर के लिए अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ गए।

नौ-मौबाइनात की हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार हुजूर अन्वर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ साढ़े सात बजे अपनी रहने के स्थान से बाहर पधारे और विभिन्न देशों से सम्बन्ध रखने वाली नौ-मौबाइनात ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

इन महिलाओं की संख्या 21 थी। और तीन ग़ैर अज़ जमाअत महिलाएं भी साथ शामिल थीं और उनका सम्बन्ध जर्मनी, गेम्बया, स्पेन, शाम और फ्रैंच देशों से था।

जर्मन, इतालवी और फ्रैंच राष्ट्रीयत से सम्बन्ध रखने वाली तीन ऐसी नौ-मौबाइनात भी शामिल थीं जिन्हों ने आज ही जलसा के आख़िरी दिन बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़त फ़रमाने पर सदर साहिबा लजना इमाल्लाह जर्मनी ने इन महिलाओं का इख़तिसार के साथ परिचय करवाया।

इसके बाद एक महिला ने प्रश्न किया कि HANAU में मस्जिद के उद्घाटन और जलसा सालाना जर्मनी में हुज़ूर अनवर के समापनीय भाषण में सियासत पर बात करते हुए यह कहा गया कि नौजवानों को सियासत में आना चाहिए। क्या जमाअत का यही मौक़िफ़ है।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि मैंने यह नहीं कहा था। हिमबर्ग के ज़िला असैंबली के एक अहमदी मेंबर गुलफ़ाम देश साहिब ने भी अपने ऐडरैस में नौजवानों को सियासत में आने का मश्वरा दिया था। शायद अनुवाद सही नहीं हुआ।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : यहां मुल्क में सियासत का जो सिस्टम चल रहा है इस में हम शामिल हो सकते हैं। दीन की ओर से कोई रोक नहीं है।

महिला ने कहा कि स्वीकार इस्लाम से पहले मुझे सियासत में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी थी, फिर इस्लाम में भी दिलचस्पी हुई और अब मैं एक अहमदी मुस्लमान औरत हूँ मैं रहनुमाई चाहती हूँ कि मुझे सियासत के काम को जारी रखने के लिए किस से आज्ञा की आवश्यकता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मेरे से आज्ञा ले लें। यदि सियासत में Active होना चाहती हैं तो हो सकती हैं परन्तु अब चूँकि आप अहमदी हैं इस लिए प्रत्येक दृष्टि से अपने सम्मान का ख्याल रखना है। इसी तरह बा पर्दा रह कर जिस तरह आप उस समय मेरे सामने पर्दे वाले कपड़ों में हैं, सेवा कर सकती हैं तो करें। एक बात ज़हन में रखें कि सियास्तदान झूठ बहुत बोलते हैं आपने झूठ नहीं बोलना।

इसी महिला ने दूसरा प्रश्न यह किया कि क्या हम मस्जिदें में सियासत पर बातचीत करने के लिए प्रोग्राम करवा सकते हैं।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यदि मस्जिद में मल्टी परपज़ हाल है तो कर सकती हैं। जैसा कि बैतुल फ़तूह में हाल हैं तो वहां पर इस को ऐसे प्रोग्रामों के लिए प्रयोग कर सकते हैं। मस्जिद के अंदर नहीं करना। हाल इत्यादि में गेम्ज़ और मीटिंगज़ कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यहां तो छोटी मस्जिदें बन रही हैं बड़ी मस्जिदें बनाएँ। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बर्तानिया में अभी इंतेख़ाबात हुए हैं। वहां दोनों पार्टीज़ के मेंबर्ज़ ने बैयतुल आफ़ियत आकर अपनी पार्टी का उद्देश्य बताया।

एक ग़ैर अज़ जमाअत महिला (जो क़ाहिरा की यूनीवर्सिटी में पढ़ा रही हैं) ने हुज़ूर की सेवा में कहा कि मैं हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ और हुज़ूर अनवर के लिए दुआ करती हूँ।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर उन्हों ने कहा कि उसने हुज़ूर अनवर का वीरवार वाले दिन का जर्मन मेहमानों से भाषण सुना है और किताब "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" पढ़ी हुई है। यह बहुत अच्छी किताब है।

एक नौ-मुबाईन महिला जिसने आज ही बैअत का सौभाग्य पाया ने बताया कि मेरा वर्ष के आरंभ से ही इरादा था कि में इस रुहानी यात्रा पर जाऊं और अपनी सहेली को भी साथ लेकर जाऊं और आज वह यहां आई हुई हैं और उनकी सहेली भी साथ हैं। उन्हों ने कहा कि उनके पास घर में एक मीटिंग रुम है जिसे वह जमाअत के लिए प्रस्तुत करना चाहती हैं। यह एक बड़ा कमरा है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपने हलक़ा के सदर से सम्पर्क करें और उनसे बात कर लें कि लजना को जब भी आवश्यकता हो तो उन मेंबर महिला से सम्पर्क कर सकती हैं।

एक महिला ने अर्ज़ किया कि उन्हें डिप्रेशन का रोग है उन्होंने शौहर से अलैहदगी इख़तियार कर ली है। शौहर का सम्बन्ध तुर्की से था। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक उनके लिए होम्योपैथी दवाई का नुस्ख़ा तजवीज़ फ़रमाया और हिदायत फ़रमाई कि सोने से पूर्व दस क़तरे ले लिया करें।

एक महिला ने कहा कि मेरा नाम EVA है। मेरा इस्लामी नाम रख दें। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक अफ़ीफ़ा नाम तजवीज़ फ़रमाया।

एक महिला ने कहा कि मेरा नाम KATHRINA है मैं भी अपना इस्लामी नाम रखवाना चाहती हूँ। हुज़ूर अनवर के दरयाफ़त फ़रमाने पर उन्हों ने बताया कि KATHRINA के अर्थ पाक और पाकीज़ा के हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक फ़रमाया नाम तय्यबा रख लें।

एक महिला ने कहा कि मैंने फरवरी में बैअत की और बताया कि वह पहले ईसाई थीं और बाक़ी फ़ैमिली भी ईसाई है। अपने ख़ानदान में वह अकेली मुस्लमान हैं और वह क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना, सीखना चाहती हैं। वह तालीमी, तर्बीयती क्लास में जाती हैं तो वहां सब उर्दू बोलते हैं और उन्हें किसी चीज़ की समझ नहीं आती। इस पर हुज़ूर अनवर ने नाराज़गी का प्रकटन करते हुए हिदायत फ़रमाई कि आप लोग प्रबन्ध क्यों नहीं करते जिनको केवल उर्दू भाषा आती है उनको जर्मन की ओर लेकर आएं।

दो और महिलाओं ने अपना नाम तजवीज़ करने की दरख़ास्त की। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक एक का नाम मारिया और दूसरी महिला का नाम आलीया तजवीज़ फ़रमाया।

एक महिला ने हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा किया और बताया कि वह नमाज़ और दुआएं सीख रही है। दुआएं बहुत लंबी हैं परन्तु वह सीख रही हैं। उन्हें कोई ऐसी छोटी दुआ बताएं जिसे वह याद करके पढ़ सकें।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दुआएं तो सारी अच्छी हैं आप सूरत इख़लास छोटी है उसे याद कर लें।

नौ-मुबाईन महिलाओं की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलके साथ यह मीटिंग आठ बजे समाप्त हुई।

नौ-मुबाईन लोगों की हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ नौ-मुबाईन लोगों की मुलाक़ात शुरू हुई।

एक अरब मित्र से हुज़ूर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि आपने क्या देखकर बैअत की है। इस पर उन्हों ने कहा कि मैंने अहमदियत में हक़ीक़ी इस्लाम देखा है। ख़िलाफ़त

को देखा है। मैंने स्वप्न में देखा था कि एक दीवार पर मोटे शब्दों में अहमदियत लिखा हुआ है और अहमदियत के शब्द से नूर फूट रहा है इस ख़्वाब से भी मुझे बहुत तसल्ली हुई और मैंने बैअत ली।

एक अरब मेहमान कहने लगे कि यहां आने से पूर्व मेरी इच्छा थी कि मैं हुज़ूर अनवर को क़रीब से देखूं। कल जब हुज़ूर अनवर ने जर्मन मेहमानों से भाषण फ़रमाया तो मैं अगले हिस्सा में बैठा हुआ था। मैंने हुज़ूर अनवर को क़रीब से देखा। इस तरह ख़ुदा तआला ने मेरी इच्छा पूरी कर दी। और अब आज में हुज़ूर अनवर के सामने बैठा हूँ और बहुत क़रीब हूँ।

एक सीरियन अहमदी मित्र जो कि जर्मनी में रहते हैं कहने लगे कि जलसा का सारा माहौल भाईचारे वाला था। अहमदी लोगों के अख़लाक़ को देखकर मेरा इतमीनान बढ़ा है और मैं इस जलसे से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

एक सीरियन नौ मुबाइअ ने बताया कि जर्मनी में अरब अहमदी लोगों के साथ मेरी तब्लीग़ी नशिस्तें हुईं और प्रश्न,उत्तर हुए जब मेरी पूरी तसल्ली हो गई तो मैंने बैअत कर ली।

देश कैमरोन से सम्बन्ध रखने वाले एक मित्र ने बताया कि 2007 ई. में मेरा जमाअत से सम्पर्क हुआ था और मैंने जमाअत का परिचय प्राप्त करना शुरू किया। 2011 में मैंने नाईजीरिया जा कर बैअत की। जब मैंने अहमदियत स्वीकार की तो फ़ैमिली की ओर से पर्याप्त विरोध हुआ और मैंने घर छोड़ने का फ़ैसला कर लिया। मैं नाईजर आ गया फिर वहां से मराक़श आया और स्पेन में दाख़िल हुआ। मेरी ग़ुर्बत और नादारी की यह हालत थी कि भूक के कारण से कुछ मकरूह चीज़ें भी खानी पढ़ीं। और आजकल मैं बेल्जियम में हूँ और जमाअत से निरंतर सम्पर्क में हूँ और पहली दफ़ा जलसा में शामिल हुआ हूँ और प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

एक जर्मन नौ अहमदी PATRICK GEELHAAR भी इस मज्लिस में उपस्थित थे। कहने लगे मुझे आज बैअत करने का सौभाग्य नसीब हुआ है और इस का कारण हुज़ूर अनवर का जर्मन मेहमानों से भाषण था। मुझे अहमदिया मुस्लिम जमाअत में ख़िलाफ़त के माध्यम से सच्ची मुहब्बत नज़र आई है। मेरा दिल मुहब्बत और नूर से परिपूर्ण है। मुझे इस समय हुज़ूर अनवर की पेशानी पर-नूर महसूस हो रहा है। अब मैं अमन और मुहब्बत का संदेश यहां से लेकर बाहर जाऊंगा। और बाक़ी लोगों तक भी यह संदेश पहुंचाऊंगा। इस समय मैं इस मुहब्बत से परिपूर्ण हूँ और बाहर जा कर पूरे प्रयास के साथ दूसरे लोगों तक यह संदेश पहुंचाता हूँ।

स्पेन से आने वाले एक अरब मित्र ने अर्ज़ किया कि स्पेन में अरब अहमदियों की संख्या बहुत थोड़ी है। हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ की दरख़ास्त है कि हमारी संख्या बढ़े।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत तो आपने बढ़ानी है। तब्लीग़ करें और अहमदियत का संदेश पहुंचाएं। शादियां करके संख्या बढ़ाएं या वैसे बढ़ाएं। अल्लाह तआला आपके प्रोग्रामों में बरकत डाले और फ़रमाया।

एक जर्मन नौ-मुबाईन ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ की दरख़ास्त करते हुए कहा कि हुज़ूर अनवर ने जो संसार के विभिन्न लीडरों को पत्र लिखे थे और उन्हें लिखा था कि अदल-ओ-इन्साफ़ के साथ संसार में अमन के क़ियाम की ओर वापस आओ। तो क्या किसी ने इन पत्र का रिस्पांस दिया है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कैनेडा और यू.के के वज़ीर-ए-आज़म ने उत्तर भिजवाया था। बाक़ी अमरीका और कुछ दूसरों का संदेश था कि हम प्रयास कर रहे हैं। बेल्जियम से आने वाले एक अरब मित्र ने अर्ज़ किया कि एक दिन मैं जमाअत के सैंटर के बाहर से गुज़र रहा था। मिशन के सामने कलिमा तीयबा ला-इलाह इल-लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह लिखा हुआ देखा तो मैं अंदर चला गया। इस तरह मेरा पहली मर्तबा जमाअत के दोस्तों से सम्पर्क हुआ। वहां के मुबल्लिग़ से मिला। अहमदियत के बारे में बातें हुईं। दो-चार दिन आकर नमाज़ें पढ़ीं इस तरह मज़बूत राबते क़ायम हो गए। और फिर मेरा अहमदियों से सदैव सम्पर्क रहा। जब मैं अहमदिया मस्जिद में नमाज़ पढ़ता था तू मुझे यहां दूसरी मस्जिदें की निसबत ज़्यादा सुकून था।

अब मैं जब से यहां आया हूँ और हुज़ूर अनवर को देखा है तो मेरी अजीब सी कैफ़ीयत हो गई है। मुझे समझ नहीं आया कि क्या हुआ मैं रोने लग गया। मैं अपने आपको एक नया इन्सान महसूस करता हूँ। हुज़ूर अनवर के चेहरा मुबारक पर जब भी नज़र पड़ती तो मेरा दिल यह गवाही देता कि यह व्यक्ति झूठा नहीं हो सकता। जो दिन रात हमारी भलाई और हिदायत के लिए काम कर रहा है। अब मैं अहमदियत के साथ हूँ। मेरे लिए दुआ करें कि अब मेरा विरोध भी हो रहा है और लोग मुझे यही

पृष्ठ 1 का शेष

अनुसार एक मकान हो । यह कभी नहीं हो सकता कि दावत तो एक हज़ार आदमी की कर दे और उन के बिठाने के वास्ते एक छोटी से कुटिया बना दे। नहीं। बल्कि वह इस संख्या का पूरा ध्यान रखेगा। इसी तरह पर ख़ुदा तआला की किताब भी एक दावत और ज़याफ़त है। जिसके लिए सारी दुनिया को बुलाया गया है। इस दावत के लिए ख़ुदा तआला ने जो मकान तैयार किया है वे शक्यतयां हैं जो उन लोगों को दिए गए हैं। शक्तियों के बिना कोई काम नहीं हो सकता। अब यदि बैल, कुत्ते या किसी और जानवर के सामने क़ुरआन करीम की शिक्षाओं को प्रस्तुत करें वे नहीं समझ सकते। इसलिए कि इन में वह शक्यितां नहीं हैं जो क़ुरआन करीम की शिक्षाओं को बर्दाश्त कर सकें, परन्तु अल्लाह तआला ने हमको वह शक्तियां दी हैं और हम उन से फ़ायदा उठा सकते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 309 से 310 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

समझते हैं कि मैं काफ़िर हो चुका हूँ।

स्पेन से आने वाले एक नौ मुबाइअ ने अर्ज़ किया कि मैं यहां जलसे में पहली दफ़ा आया हूँ और मुझे हुज़ूर अनवर से सौभाग्यवंश मुलाक़ात का अवसर मिला है। मैंने हुज़ूर अनवर को क़रीब से देखा है अल्लाह तआला हुज़ूर का साया हम पर सलामत रखे।

स्पेन से आने वाले एक नौ-मुबाईन ने बताया कि मुझ पर सबसे ज़्यादा प्रभावित जमाअत की सच्चाई ने किया है। जो लोग जमाअत के विरुद्ध झूठ बोलते हैं उनके झूठ बोलने के कारण से जमाअत की सच्चाई और सदाक़त मुझ पर प्रकट हुई है और मैंने अहमदियत स्वीकार की है।

इन नौमुबाईन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात आठ बजकर 20 मिनट तक जारी रही।

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार मुल्क क्रोशिया से आने वाली दो लेखक महिलाओं ने और एक जर्मन लेखक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का इंटरव्यू लिया।

क्रोशिया से आने वाली लेखक महिलाओं ने जलसे के विभिन्न प्रोग्रामों और दृश्य की डाकूमैंटरी फ़िल्म भी बनाई थी जो उनके वापस जाने के बाद क्रोशिया के टीवी पर प्रसारित होगी।

जर्मन लेखक महिला का सम्बन्ध जर्मनी के सबसे बड़े ऑनलाइन अख़बार से है। इस अख़बार का प्रकाशन साढ़े सतरह मिलियन से अधिक है। हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू इस ऑनलाइन अख़बार में बतौर फ़िल्म दो किस्तों में प्रकाशित हुआ। इस तरह दो दफ़ा प्रकाशित होने के परिणाम में सम्पूर्णता प्रकशन 34 मिलियन होगा।

जर्मन महिला ने प्रश्न किया कि आपने जर्मन अख़बार को इंटरव्यू देते हुए बताया था कि इस समय सबसे संगीन मसला यह है कि नौजवान ख़ुदा तआला से दूर हो रहे हैं। आपके विचार में ऐसा क्यों है।

इसके उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : सिर्फ़ नौजवान ही नहीं बल्कि लोगों की एक भारी संख्या धर्म से दूर जा रही है यहां तक कि ख़ुदा तआला की हस्ती पर विश्वास ही नहीं है। तो यह केवल नौजवानों के साथ विशेष नहीं किया जा सकता बल्कि दूसरे भी इस में शामिल हैं। परन्तु मैंने यह कहा था कि संप्रदायवादी लोग निराशा के मारे हुए हैं और नौजवान नसल भी इस मेंशामिल है। मैंने बताया था कि इस के बहुत सारे कारण हैं जिस में बेरोज़गारी, कुछ न पूरी होने वाली इच्छाओं और इस तरह की और भी चीज़ें हैं। अत: कभी कबार ऐसे लोगों को अपने दिलों को तसल्ली देने के लिए किसी चीज़ की आवश्यकता होती है परन्तु चूँकि उनकी रहनुमाई करने वाला कोई नहीं होता इस लिए वह सीधे रास्ते पर चलने के बजाय उन लोगों का निशाना बन जाते हैं जो इन नौजवानों की ठीक तरह से रहनुमाई नहीं करते और फिर ये लोग भटक जाते हैं। तो इस के कई कारण हैं। अब मेरे ज़हन में नहीं कि इस समय निर्धारित प्रश्न क्या था? हाँ यदि आपके ज़हन में कोई प्रश्न है तो आप कर सकते हैं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने www.ahmadipedia.org का आरंभ फ़रमाया

इसमें जमाअती पुस्तकें, व्यक्तित्व, वाक़ियात, अक़ायद इत्यादि के हवाले से बुनियादी मालूमात प्रदान की गई हैं

किसी भी विषय पर आप भी अपनी मालूमात या शवाहिद या दस्तावेज़ात इसके लिए प्रदान कर सकेंगे

अल्हमदुलिल्लाह सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तिथी 2 जुलाई 2021 दिन जुमअ:तुल मुबारक बाद नमाज़ जुमअ: जमाअत अहमदिया की एक नई वेबसाइट www.ahmadipedia.org का आरंभ फ़रमाया। इस की तफ़सील का वर्णन करते हुए हुज़ूर अनवर ने अपने ख़ुतबा जुमा में फ़रमाया

"एक ऐलान करना चाहता हूँ वह यह है कि अहमदिया इन्साईक्लोपीडीया एक बनाई गई है जो आज लॉन्च किया जाएगा मर्कज़ी विभाग आरकाईव् और रिसर्च सैंटर ने यह बनाई है। यह वेबसाइट जमाअत के लोगों के लिए ऑनलाइन प्रदान की जा रही है। इस तक आने का मर्ग जो है वह www.ahmadipedia.org पर हो सकता है जहां एक सर्च इंजन की तर्ज़ पर Home page विषय तलाश करने के लिए खुल जाएगा। उसे निहायत सादा और इस्तिमाल के लिए आसान रखा गया है। जमाअती पुस्तकों, व्यक्तित्व, वाक़ियात, अक़ायद इत्यादि के हवाले से बुनियादी मालूमात प्रदान की गई हैं। हर इन्ट्री के साथ सम्बन्धित वैबसाईटस विडियोज़ और जमाअती अख़बारात से मज़ामीन के लिंक प्रदान किए गए हैं ताकि तफ़सीली मालूमात इन माध्यमों से हासिल की जा सकें। तफ़सीलात के लिए दीए गए इन लिनक्स का एक फ़ायदा यह भी होगा कि जमाअत अहमदिया की अन्य वैबसाईटस तक भी तलाश करने वालों को आने का अवसर हासिल होगी और वे समस्त अख़बारात और पत्रिकाओं से लाभ प्राप्त कर सकेंगे। दुनिया-भर में फैले अहबाब जमाअत के पास बहुत सी लाभदायक मालूमात हैं जो कहीं रिकार्ड शूदा नहीं। अहमदी पीडीया की वेबसाइट पर एक ऑपशन contribute के नाम से भी दिया गया है जहां वे किसी भी विषय पर अपनी मालूमात या शवाहिद या दस्तावेज़ात प्रदान कर सकेंगे। यह नहीं कि स्वयं सीधे डाल दें बल्कि वे उसकी इंतिज़ामीया को प्रदान करेंगे। इस प्रकार प्रदान किये गए मवाद पर तहक़ीक़ और तसदीक़ के बाद उसे मुताल्लिक़ा विषय की ऐन्ट्री में शामिल कर दिया जाएगा। इस तरह यह वेबसाइट समस्त जमाअत के सहयोग से जारी-ओ-सारी रहने वाला प्राजैक्ट बनेगी और इं शा अल्लाह हर अहमदी के लिए लाभदायक होगी। यदि किसी को वेबसाइट पर कोई मतलूबा मवाद न मिले तो वे अहमदी पीडीया से सम्पर्क कर सकेगा और फिर ये लोग वेबसाइट पर उद्देशित मवाद प्रदान करने का इंतिज़ाम करेंगे। यदि यह समस्त मालूमात मुसद्दिक़ा माध्यम से प्रदान की गई हैं जबकि यदि किसी तलाश करने वाले के पास ऐसे शवाहिद हों जो किसी भी मालूमात के विपरीत हों तो हमें ऐसे शवाहिद प्रदान करें ताकि बाद तहक़ीक़ जमाअत की तारीख़ को मुसद्दिक़ा तौर पर महफ़ूज़ करने का इंतिज़ाम किया जा सके। इस वेबसाइट की तैयारी के लिए समस्त टेक्नीकल मराहिल मर्कज़ी विभाग आई. टी. ने बड़ी सुन्दरता से पुरे कर दिए हैं और बड़ी मेहनत की है बिभाग आई. टी ने इस के लिए जिसमें उनका मुस्तक़िल कार्य के अतिरिक्त वालेंटियर्स भी शामिल हैं। मवाद की तैयारी के लिए मर्कज़ी विभाग आरकाईव् के मुरब्बियान और वालेंटियर्स ने बड़ी मेहनत की है और उर्दू में मवाद प्रदान करने से अनुवाद की उप लोडिंग उद्देश्य समस्त कामों में अनथक मेहनत से काम किया है इन सबने जो भी ये काम करने वाले हैं इस वेबसाइट के लिए, अल्लाह तआला इन सबको प्रतिफल प्रदान करे और जुमा की नमाज़ के बाद इं शा अल्लाह आज में इस को लॉन्च भी करूँगा

नमाज़-ए-जुमा के बाद हुज़ूर अनवर ने इस को लॉन्च किया और दुआ कराई। इस लाईव दुआ में समस्त दुनिया के अहमदी एम.टी.ए के माध्यम से शामिल हुए। दुआ है कि अल्लाह तआला इस नई वेबसाइट का आरम्भ जमाअत के लिए हर लिहाज़ से बाबरकत करे। आमीन (विभाग)

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बर्तानिया की ओर से एक दिन का खेलों का आयोजन और हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की आमद

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बर्तानिया की ओर से एक दिन का खेलों का आयोजन और हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की आमद

तिथी 4 जुलाई 2021 ई. को वीवरली एबे स्कूल टिलफ़ोरड में मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बर्तानिया की ओर से एक दिन का खेलों का आयोजन किया गया। ये खेलें कोरोना की सावधानियों का विशेष ख़्याल रखते हुए आयोजित की गईं। जिनमें शमूलियत के लिए वैक्सीनेशन की दोनों ख़ुराकों का लगा होना, साईट पर कोरोना का टैस्ट नेगेटिव आना, मास्क पहनना और समाजिक दूरी रखना रखना ज़रूरी शर्ते थीं। इन खेलों के आयोजन का उद्देश्य mercy4mankind के नाम से ख़िदमत-ए-इन्सानी के लिए चंदा इकट्ठा करना था।

आदरणीय सदर साहिब मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया बर्तानिया के निवेदन को प्रेमपूर्व कक़बूल फ़रमाते हुए हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ खिलाड़ियों की हौसला-अफ़ज़ाई के लिए तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर ने ख़ुद्दाम के मध्य होने वाली रस्सा-कशी के फाईनल और फिर सलो साइकलिंग के मुक़ाबलाजात को देखा। हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सलो साइकलिंग का मुक़ाबला जीतने वाले ख़ादिम मसरूर रीजन से ताल्लुक़ रखने वाले जाज़िब चीमा साहिब की हौसला-अफ़ज़ाई फ़रमाई और उनका नाम दरयाफ़त फ़रमाया।

इसके बाद रीजनल क़ायदीन और नैशनल आमिला के मध्य रस्सा-कशी का नुमाइशी मुक़ाबला हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेमपूर्व मुक़ाबले के मध्य फ़रमाया कि रीजनल क़ायदीन ज़रा बैठ कर हो तो जीत जाएगे। इसलिए ऐसा ही हुआ और रीजनल क़ायदीन की टीम ने मुक़ाबला अपने नाम कर लिया।

सात बजे के करीब हुज़ूर अनवर अय्यद हुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और वापस इस्लामाबाद तशरीफ़ ले गए। मार्च 2020 ई. से कोरोना लॉक डाउन की सूरत-ए-हाल पैदा हो जाने के बाद अमीरुल मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ऐसी किसी लोगों की तक़रीब में यह पहली शमूलीयत है।

नुमान अहमद मज्लिस मचम पार्क, शरीफ़ रीजन ने अपने जज़बात का इज़हार करते हुए कहा कि अल्हम्दुलिल्ला कि काफ़ी समय के बाद हमारे प्यारे हुज़ूर हमारे मध्य रौनक अफ़रोज़ हुए। हुज़ूर-ए-अनवर जब तशरीफ़ लाए तो ऐसा महसूस होता था कि फ़रिश्तों की एक फ़ौज हमारी महफ़िल में शामिल हो गई है। मैं अपने आपको देखूं तो इस काबिल भी नहीं समझता लेकिन हमारे प्यारे हुज़ूर, पूरी दुनिया के इमाम और ख़लीफ़-ए-वक़्त हमारे मध्य रौनक अफ़रोज़ थे। इस बात को सोच कर मैं ख़ूब अस्तग़फ़ार करता रहा। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं अपने जज़बात का इज़हार कर सकूं।

अल्लाह तआला प्यारे आक़ा क़ा हर आन हामी औ नासिर हो और रूहुलक़ुद्दूस के ,माध्यम से हर लम्हा सहायता फ़रमाता चला जाए। आमीन

(धन्यवाद वेबसाइट अलफ़ज़ल इंटरनैशनल लंदन)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 22 July 2021 Issue No.29

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

क़ादियान के शैक्षिक संस्थानों में महिला शिक्षक की ज़रूरत है

तालीमुल इस्लाम सीनियर सैकण्डरी स्कूल और नुसरत गर्लज़ हाई स्कूल में Physical education, Punjabi, Physics, Mathematics, English, Computer, Hindi के विषय पढ़ाने के लिए लेडीज़ टीचर के कुछ रिक्त पद भरे जाने हैं। सिलसिले की ख़िदमत की भावना और अपेक्षित शैक्षिक योग्यता रखने वाली इच्छुक उम्मीदवार नज़ारत दीवान की ओर से मुद्रित जानकारी फ़ार्म भर कर अपनी दरख़ास्तें जमा करवा सकती हैं। रिक्त पद का विवरण निम्नलिखित है।

(1) P.G.T(पोस्ट ग्रैजूएट टीचर) Physics शैक्षिक योग्यता : सम्बन्धित विषय में 55% नंबरात के साथ पोस्ट ग्रैजूएशन और B.ed. के साथ किसी गर्वनमैंट से स्वीकृत विभाग में 2 वर्ष का पढ़ाने का अनुभव हो।

(2) T.G.T (ट्रेंड ग्रैजूएट जनरल लाईन टीचर) शैक्षिक योग्यता 55% नंबरात के साथ ग्रैजूएशन और B.ed. के साथ गर्वनमैंट से स्वीकृत किसी विभाग में 3 वर्ष पढ़ाने का अनुभव हो (पोस्ट ग्रैजूएट को प्राथमिकता दी जाएगी)

(3) कम्पयूटर टीचर शैक्षिक योग्यता : सम्बन्धित विषय में ग्रैजूएशन (B.C.A) 55% के साथ हो, और किसी भी स्वीकृत विभाग में 3 वर्ष का अनुभव हो। पोस्ट ग्रैजूएट को प्राथमिकता दी जाएगी

(4) Physical education teacher शैक्षिक योग्यता : सम्बन्धित विषय में ग्रैजूएशन (B.P.ed) 55% के साथ हो, और किसी भी स्वीकृत विभाग में 3 वर्ष का अनुभव हो।

CTET या TET क्वालिफाइड प्रत्याशी को प्राथमिकता दी जाएगी। *प्रत्याशी की आयु 20 वर्ष से कम और 40 वर्ष से अधिक न हो। विशेष परिस्थिति में आयु की सीमा में छूट पर ग़ौर हो सकता है। *केवल उन्ही प्रत्याशियों की स्लैक्शन पर ग़ौर होगा जो मर्कज़ी कमेटी भर्ती कारकुनान की तरफ़ से लिए जाने वाली लिखित परीक्षा और मौखिक साक्षात्कार में स्फल होंगे और नूर हस्पताल की चिकित्सा रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ होंगे। Selection की सूरत में उम्मीदवार को क़ादियान में अपनी रिहायश की व्यवस्था स्वयं करनी होगा। *इंटरव्यू के लिए क़ादियान बुलाने की सूरत में आने जाने के खर्च प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे। *इंटरव्यू की तारीख़ के सम्बन्ध में बाद में सूचना दी जाएगी। *मुद्रित फ़ार्म, दफ़्तर नज़ारत दीवान या निम्नलिखित ऐडरैस email से प्राप्त किए जा सकते हैं। *निवेदन शैक्षिक योग्यता, अनुभव के प्रमाणपत्र (self attested) प्रतियां, नज़ारत दीवान में इस घोषणा से दो माह के अंदर अंदर पहुंच जानी चाहिऐं। *रहायशी भत्ता और अन्य जानकारी के लिए निम्नलिखित ईमेल और फ़ोन नम्बरज़ पर दफ़्तरी समय में सम्पर्क किया जा सकता है।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ज़िला गुरदासपुर Pin. 143516 मोबाइल नंबर : 09682587713, 09682627592 दफ़्तर : 01872-501130 e-mail : diwan@qadian.in

(नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

इस में नहीं हुई। लेकिन जो झूठा मज़हब होगा उस में उसूल को हमेशा बदलना पड़ेगा। मिसाल के तौर पर बहाइयों को देख लो। ईरान में जाओ तो वहां बहाईत की तालीम और रंग में प्रस्तुत की जाती है क्योंकि वहां शीया हैं। सुन्नी देशों में इसी मज़हब की तालीम और रंग में प्रस्तुत की जाती है। बातीका में जाकर उसूल बिल्कुल अलग कर दी गई हैं। इसी तरह इंग्लिस्तान में वे बातें प्रस्तुत की जाती हैं जिनको वहां के लोग क़बूल करने के लिए तैयार हों। इसलिए जब मैं इंग्लिस्तान गया तो बहाइयों में से एक औरत ने मेरे साथ बात चीत की। मैंने कहा बहाउल्लाह ने कौन सी नई बात प्रस्तुत की है। उसने कहा कि बहाउल्लाह ने कहा है कि एक ही औरत से शादी करनी चाहीए। मैंने कहा कि उसने ख़ुद दो पत्नियाँ की हुई थीं। पहले उसने इंकार किया फिर कहा कि वह दावा से पहले की बात है। मैंने कहा जब वह नऊज़बिल्लाह ख़ुदा था तो फिर पहले और पीछे का तो सवाल ही नहीं। भविष्य के ज्ञानी के लिए पहले पीछे कोई अर्थ नहीं रखते। उसको पहले ही इलम होना चाहीए था कि मैं आगे चल कर क्या तालीम देने वाला हूँ। तथा उसने दावे के बाद अपने बेटे अब्बास को दो पत्नियाँ करने की आज्ञा दी क्योंकि उसके हाँ औलाद नहीं थी। इस पर उस औरत के कान में एक ईरानी बहाई औरत ने जो ईरान की थी चुपके से कहा कि दूसरी बीवी को बहाउल्लाह ने बहन बना लिया था और यही बात उस अंग्रेज़ औरत ने दोहरा दी। इस पर मैंने कहा कि बहाउल्लाह के दावा के बाद दोनों औरतों से औलाद हुई है। क्या बहन के हाँ औलाद पैदा की गई थी। इस पर वह हैरान हो कर अपनी दोस्त से पूछने लगी कि क्या दावा के बाद दूसरी औरत के हाँ औलाद होती रही है? और जब उसने कहा कि हाँ तो मज्लिस में सब हंस पड़े कि अभी तो बहन क़रार दिया था और अभी उसके हाँ उसी समय में औलाद का होना भी स्वीकार कर लिया। उद्देश्य बहाई लोग हर मुल्क में जाकर अलैहदा क़ानून बनाते हैं। यही हाल ईसाइयत का है। इसलिए उनके मिशनरी पुस्तकों में खुले तौर पर बहसें होती रहती हैं कि हर क़ौम के आगे किस रंग में मसीह अलैहिस्सलाम को प्रस्तुत करना चाहीए। शुरू मसीहीयत में भी रुम वालों ने जब मुतालिबा किया कि सबत शनिवार की जगह इतवार को हो तो मसीहीयों ने उनकी ख़ातिर शनिवार की बजाय सबत इतवार को क़रार दे दिया। इसके विपरीत इस्लाम को देखो शुरू से लेकर इस वक़्त तक सब तालीम एक जड़ पर क़ायम है। न कम करने की ज़रूरत हुई न ज़्यादा करने की।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 476 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

दरुस्सना क़ादियान (व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र) Ahmadiyya Vocational (technical) training centre, Qadian में दाख़िला शुरू है, कला सीखने के इच्छुक युवा जल्दी करें

समस्त अहमदी नौजवानों की जानकारी के लिए घोषणा की जाती है कि विभाग व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र क़ादियान में दाख़िला शुरू हो गया है। विभाग में इलेक्ट्रीशियन,प्लंबिंग, वेल्डिंग/डीज़ल मिकैनिक Motor vehicle mechanic / AC & refrigerator और कम्पयूटर के एक वर्ष के कोर्स करवाए जाते हैं और सरकारी विभाग NSIC का certificate दिया जाता है। कला सीखने के इच्छुक युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर है और जो युवा अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके इन कोर्सज़ में दाख़िला लेकर पूर्णता लाभ उठा सकते हैं। क़ादियान से बाहार के अहमदी नौजवानों के लिए जमाअत के प्रशासन के अधीन होस्टल और खाने की भी व्यवस्था है। होस्टल और खाने के खर्चों की कोई फ़ीस नहीं ली जाती है। इच्छुक युवा तुरंत निम्नलिखित नंबरों पर सम्पर्क करें।

फ़ोन नंबर : 9872923363, 9872725895, 8077546198
e-mail : darulsanaat. qadian @gmail. com

(प्रिंसिपल दरुस्सना क़ादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad